अन्तर्राष्ट्रीय
गीता महोत्सव
कुरुक्षेत्र, हरियाणा (भारत)

अतुल्य
कुरुक्षेत्र

दिव्य गीत भगवद्गीता की धरा

अन्तर्राष्ट्रीय
गीता महोत्सव

(कला, शिल्प, व्यंजनों, संस्कृति,
इतिहास, धरोहर एवं आध्यात्मिकता का महोत्सव)

शुक्ल पक्ष मार्गशीर्ष मास

कुरुक्षेत्र को गीता जयंती महोत्सव मनाने का एक विशेष सौभाग्य प्राप्त है, क्योंकि महाभारत युद्ध से पूर्व इसी धरा पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा मोहग्रस्त अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का अमर संदेश दिया गया था। गीता जयंती के वार्षिक उत्सव का लक्ष्य जनमानस में नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान की स्थापना करना है।

वर्ष 1989 से, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड इस महोत्सव का आयोजन करता आ रहा है। उत्सव के दौरान कुरुक्षेत्र में आने वाले पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों को इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की अद्भुत धरोहर को देखने का अवसर मिलता है, जो इस देश के गौरवशाली अतीत को प्रकट करती है।

समस्त विश्व समुदाय के मनो-मस्तिष्क पर गीता के इस महान शाश्वत संदेश के प्रभाव को देखते हुए ही हरियाणा सरकार ने गत वर्ष से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गीता जयंती महोत्सव मनाने का निर्णय लिया।

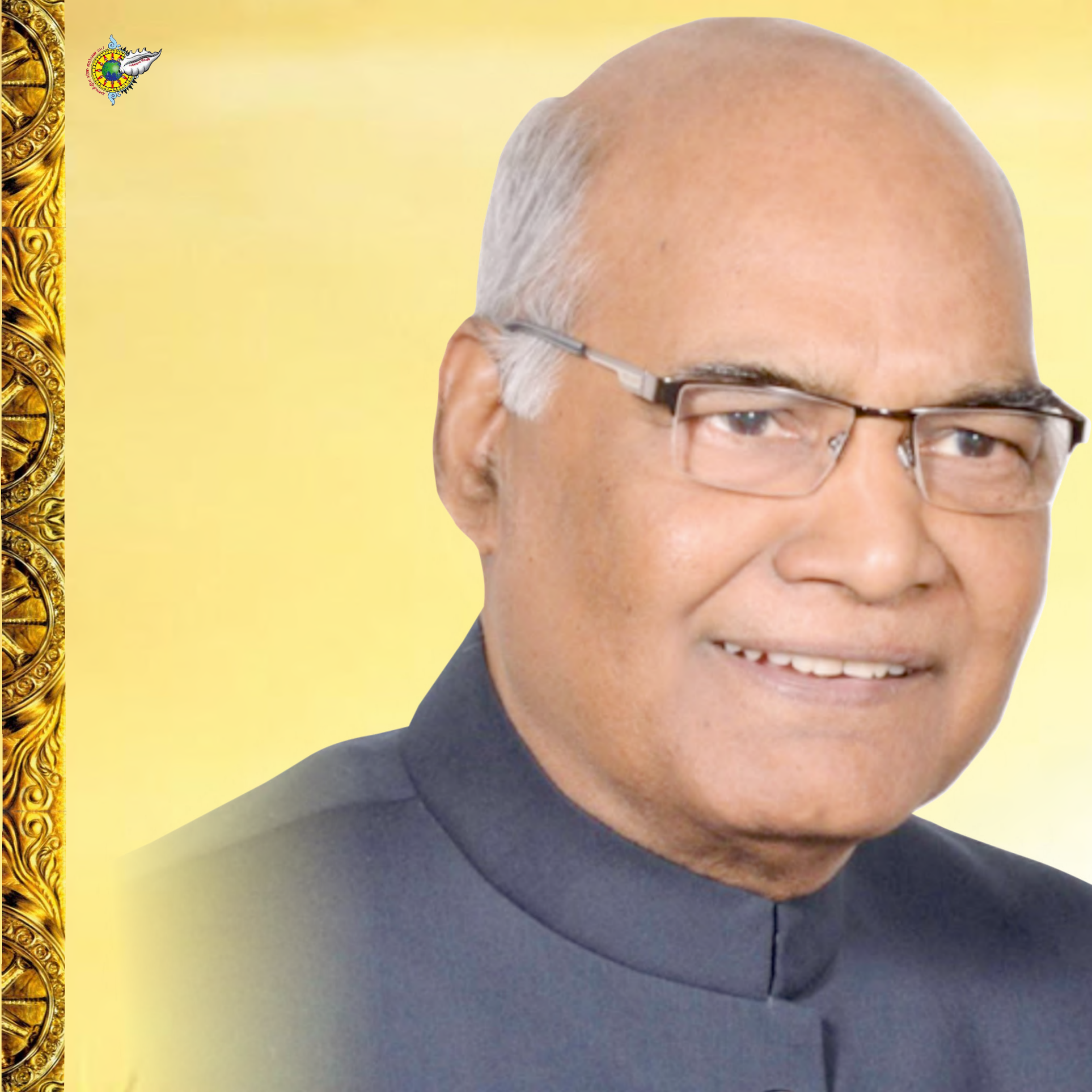

आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है

इसे शस्त्र खण्डित नहीं कर सकते

अग्नि जला नहीं सकती

जल गला नहीं सकता

वायु सुखा नहीं सकती

श्रीमद्भगवद्गीता

रामनाथ कोविंद

राष्ट्रपति, भारत

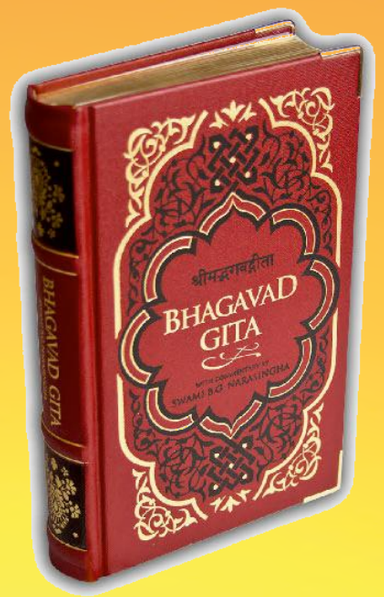

मेरे पास देने के लिए गीता
से श्रेष्ठ कुछ नहीं है और
संसार में प्राप्त करने के लिए
इससे श्रेष्ठ अन्य कुछ भी नहीं है

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री, भारत

गीता ही एकमात्र

ऐसा ग्रंथ है

जिसके अनुसरण से

इस संसार में रहते हुए

आध्यात्मिकता

प्राप्त की जा सकती है

राजनाथ सिंह

गृहमंत्री, भारत सरकार

श्रीमद्भगवद् गीता

असंख्य पंथों एवं संप्रदायों को

प्रेरणा देती है और इसके साथ ही

यह सर्वोच्च आध्यात्मिक ग्रन्थ भी है

जोकि अध्यात्म पिपासुओं के लिए

पूर्व कि भांति आज भी प्रेरणा स्रोत है

सुषमा स्वराज

विदेश मंत्री, भारत सरकार

भगवद्गीता को अन्नत बुद्धि व
ज्ञान का मूल स्रोत माना जाता है
जिसमें मानव जाति के समक्ष आई भौतिक
एवं आध्यात्मिक समस्याओं का
समाधान करने की क्षमता है

प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी
राज्यपाल, हरियाणा
एवं
अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

गीता के दर्शन को यदि विस्तारित किया जाता है

तो यह महाभारत बन जाता है

इसके विपरीत यदि महाभारत को दर्शन में

संक्षिप्त किया जाता है तो यह गीता बन जाती है

मनोहर लाल

मुख्यमंत्री, हरियाणा

गीता हमें

असत्य से सत्य

अज्ञानता से ज्ञान

मृत्यु से अमरत्व

पीड़ा से परम आनंद

निर्बलता से सबलता

भ्रम की स्थिति से

दृढ़ विश्वास

अपूर्णता से पूर्णता

की ओर अग्रसर होने का

मार्ग दिखाती है

गीता मनीषी स्वामी
श्री ज्ञानानंद जी महाराज

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात केवल गीता का ही सम्यक् प्रकार से पठन और मनन करना चाहिए जो
साक्षात् भगवान विष्णु के मुखारविन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार का क्या प्रयोजन है

गीता जयंती
दिव्य गीत की पुनरावृत्ति

गीता का शाश्वत संदेश, जो भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध की पूर्व संध्या पर अर्जुन को दिया गया था, विश्व के दार्शनिक इतिहास में एक मील का पत्थर है। पारंपरिक रूप से यह माना जाता है कि गीता का संदेश भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कलियुग के आगमन से 36 वर्ष पूर्व दिया गया था। इसी परंपरा पर विश्वास करते हुए, गीता उपदेश के आज तक 5153 वर्ष बीत चुके हैं। भारतीय कालगणना के अनुसार, गीता जयंती का दिन मार्गशीर्ष माह में शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन पड़ता है, जिसकी पुनरावृत्ति कभी नवम्बर और कभी दिसम्बर में होती है।

भारत मे अन्यत्र इस दिन को 'मोक्षदा एकादशी' के रूप में भी मनाया जाता है। मोक्षदा अर्थात मोक्ष दायक। इस दिन साधकों को ज्ञान, कर्म या भक्ति भाव के माध्यम से स्वयं को शुद्ध करने का अवसर मिलता है, जैसाकि आत्मा की मुक्ति के लिए गीता में बताया गया है। श्रीकृष्ण की दिव्य चेतना का यह प्रकाश सम्पूर्ण मानवता की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं रक्षा के लिए है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

भगवद्गीता - 4/34

उस ज्ञान का तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भलीभाँति दण्डवत्-प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वह परमात्मतत्व को भलीभाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

गीता पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

गीता जयंती महोत्सव के प्रारम्भ से ही कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय गीता के विभिन्न पक्षों पर संगोष्ठियों का आयोजन करता आ रहा है। हर वर्ष गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। पिछले वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर गीता पर एक संगोष्ठी का आयोजन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में किया गया था।

इस संगोष्ठी में भारत व विदेशों से कई प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया। इसी संगोष्ठी के समापन समारोह के अवसर पर 'संत सम्मेलन' का आयोजन किया गया था, जिसमें देश के कई प्रमुख संतों और साधकों ने भाग लिया। गीता जयंती महोत्सव के इतिहास में यह कुरुक्षेत्र में अपनी तरह का विशिष्ट आयोजन था।

इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा गीता पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करवाया जा रहा है। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व के विभिन्न भागों से अनेक गीता मनीषी एवं लब्धप्रतिष्ठ विद्वान इसमें भाग लेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव
6-10 दिसम्बर 2016
कुरुक्षेत्र

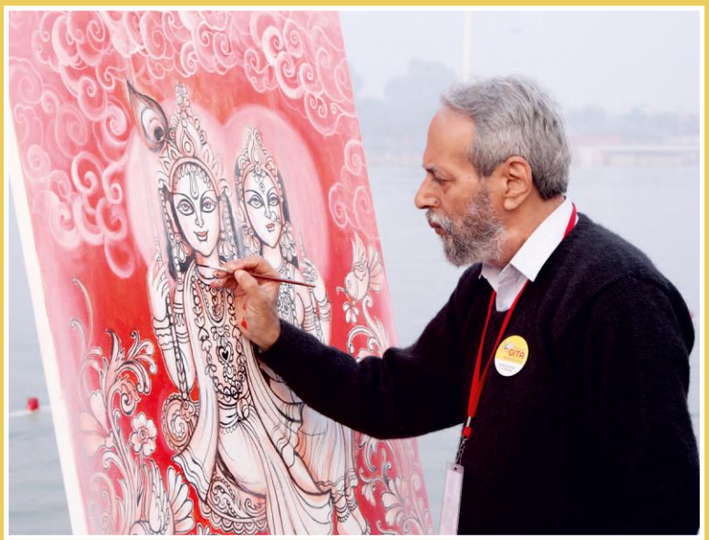

गीता जयंती महोत्सव – एक सिंहावलोकन
शिल्प मेले की झलक

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड वर्ष 1989 से ही कुरुक्षेत्र में गीता जयंती दिवस का उत्सव मनाता आ रहा है। पहले यह उत्सव शहर के ही कुछ स्वैच्छिक एवं धार्मिक संगठनों द्वारा मनाया जाता था। वर्ष 1989 में हरियाणा सरकार ने इस उत्सव को राज्य स्तर पर मनाने का निर्णय लिया। तभी से इस उत्सव को कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के साथ-साथ नगर के विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं स्वैच्छिक संगठन भाग लेते हैं। विगत कई वर्षों में इस महोत्सव ने विभिन्न दिशाओं में कई महत्वपूर्ण आयाम प्राप्त किए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर आयोजित शिल्प मेले में संपूर्ण भारत के कलाकार, चित्रकार, कुम्भकार, मूर्तिकार तथा अन्य हस्तशिल्प विशेषज्ञ भाग लेते हैं, जो इस महोत्सव के दौरान अपने उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय करते हैं। देश के विभिन्न भागों से आई पारंपरिक हस्तशिल्प एवं कला वस्तुओं के चलते भारी संख्या में दर्शक कुरुक्षेत्र की ओर आकर्षित होते हैं। इस अवसर पर चित्रकारी और रंगोली के शिविर भी दर्शकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र बने रहते हैं। शिल्प मेला पिछले कई वर्षों से इस महोत्सव का सबसे अधिक आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस वर्ष भी मेले में कई देशों की शिल्प वस्तुएं सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेंगी।

आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संगठनों की भागीदारी

इस महोत्सव के अवसर पर कुरुक्षेत्र आने वाले जनसमुदाय ने पिछले अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संगठनों की भागीदारी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। महोत्सव के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कुछ संगठनों जैसे जीओ गीता, चिन्मय मिशन, इस्कॉन, विवेकानंद मिशन, भारत लोक शिक्षा परिषद् तथा अन्य संगठनों ने प्रदर्शनियों, व्याख्यानों एवं अन्य प्रासंगिक गतिविधियों का आयोजन किया ।

पूर्व वर्ष की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के आयोजक ऐसे संगठनो की विभिन्न सामाजिक-धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कार्यक्रमों में बड़े स्तर पर भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत हैं। इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें कई प्रतिष्ठित संगठनों द्वारा भाग लेने की संभावना है।

भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

हर वर्ष इस महोत्सव के अवसर पर सांयकाल को भगवान श्रीकृष्ण, कुरुक्षेत्र एवं महाभारत से संबंधित विषयों पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष ऐसे कार्यक्रम छह दिन तक हर सांयकाल को आयोजित किए जाएंगे।

गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर राज्य, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले विशाल सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने ब्रह्मसरोवर पर दर्शकों की विशाल संख्या को आकर्षित किया है। विभिन्न वर्गों के लोगों ने नृत्य-नाटक, भक्ति गीतों और महाकाव्य से संबंधित नाट्यमंचनो की भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का भरपूर आनन्द उठाया है। इन कार्यक्रमों ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया है एवं हर वर्ष इस महोत्सव को नए आयाम प्रदान किए हैं।

पिछले वर्ष विदेशी कलाकारों ने भी इन भव्य कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इस अवसर पर इन कार्यक्रमों को देखने के लिए हजारों की संख्या में दर्शक एकत्रित होते हैं। इस वर्ष भी भारतीय और विदेशी कलाकारों की भागीदारी इन कार्यक्रमों को नई ऊंचाइयां प्रदान करेगी।

छात्रों के लिए शैक्षणिक गतिविधियां

गीता जयंती महोत्सव की प्रासंगिकता जनमानस के नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनरुत्थान के लिए है। यह आज हमारे लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम एक चुनौतीपूर्ण समय से गुजर रहे हैं। दिव्य गीत के रूप में भगवद्गीता की मूर्त एवं अमूर्त धरोहर ने वर्षों से इसे अमरता प्रदान की है। भगवद्गीता का आध्यात्मिक प्रकाश उन व्यक्तियों पर निरंतर पड़ रहा है जो सदैव सत्य की खोज में लगे हुए है। कई सदियों से असंख्य लोगों ने इस दिव्य गान से स्वयं को आलोकित कर भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविंद से निकली वाणी से असीम शांति प्राप्त की है।

प्रारम्भ में गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर कुरुक्षेत्र के धार्मिक और स्वैच्छिक संगठनों द्वारा केवल धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का ही आयोजन किया जाता था। कालांतर में इस महोत्सव में सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक कार्यक्रमों को भी सम्मिलित किया जाने लगा। गीता की शिक्षाओं का प्रचार एवं प्रसार करने के उद्देश्य से, इस महोत्सव में छात्रों के लिए गीता श्लोकोच्चारण, गीता पर भाषण एवं गीता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं जैसे शैक्षणिक कार्यक्रमों को भी शामिल किया गया। पिछले कुछ वर्षों से ये शैक्षणिक गतिविधियां बहुत ही लोकप्रिय हुई हैं, क्योंकि इन गतिविधियों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी भाग लेते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता पाठ

गीता सभी संप्रदायों के उन लोगों के आध्यात्मिक ज्ञान की पिपासा को शान्त करती है, जो अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर हैं। देश-विदेश के लाखों साधकों ने इस महान ग्रंथ से शांति प्राप्त की है। आध्यात्मिक शक्ति के एक दीर्घ इतिहास के साथ आज भी यह सभी के लिए एक प्रकाश स्तंभ का कार्य कर रही है। यह किसी एक धर्म या संप्रदाय का प्रतिनिधत्व नहीं करती, वरन यह समय और स्थान की सीमाओं से परे एवं सार्वभौमिक है।

श्रीमद्भगवद्गीता में सात सौ श्लोक हैं, जिन्हें अठारह अध्यायों में विभाजित किया गया है। इस दिव्य और शाश्वत संदेश को उपनिषदों का सार माना जाता है। गीता के सभी अध्याय और सभी श्लोक पूरे समाज के लिए सार्थक हैं, परंतु कर्म योग शिक्षकों और छात्रों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है, जो कि समाज में बुराई के विरुद्ध अर्जुन की भूमिका निभा सकते हैं।

गीता जयंती महोत्सव के प्रारम्भ से ही गीता पाठ को आश्रमों और धार्मिक संस्थाओं तक सीमित रखा गया था, जहां साधक या धर्मपरायण लोग गीता जयंती के दिन गीता का पाठ करते थे। गीता जनमानस के नैतिक पुनरुत्थान में समर्थ है एवं साधकों की आध्यात्मिकता को एक नया आयाम दे सकती है। इसलिए यह विचार किया गया कि इस ग्रंथ का पाठ सामान्य रूप से सभी लोगों के लिए और विशेष रूप से छात्रों के लिए सुनिश्चित करवाया जाए। इसीलिए पिछले कुछ वर्षों से गीता जयंती महोत्सव के कार्यक्रमों में गीता पाठ को सम्मिलित किया गया है। अब छात्रों द्वारा गीता का संपूर्ण पाठ गीता जयंती महोत्सव का एक प्रमुख आकर्षण बन चुका है। गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर हजारों छात्र, पर्यटक और तीर्थयात्री गीता के संपूर्ण पाठ में भाग लेते हैं।

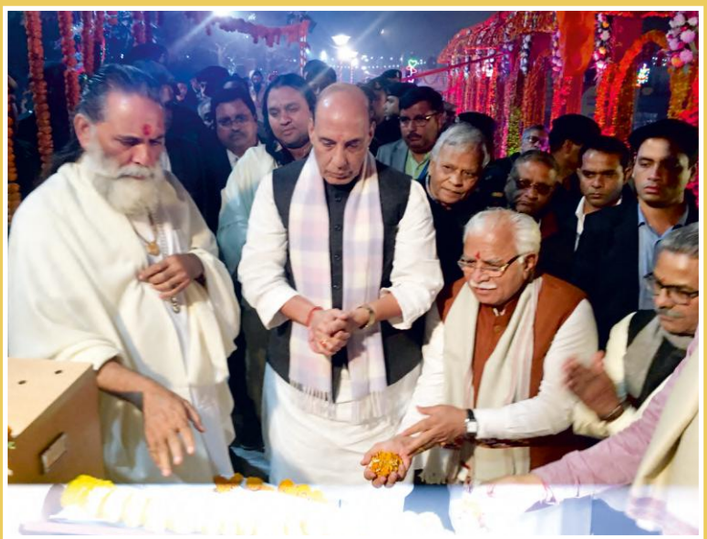

महाआरती और दीपदान

आरती और दीपदान गीता जयंती महोत्सव के पारंपरिक कार्यक्रम हैं जिन्हें गीता जयंती के दिन सायंकाल को आयोजित किया जाता है। ब्रह्मसरोवर के पवित्र जल में दीपकों का विसर्जन पूरे वातावरण को अत्यंत आनंदमय एवं सौंदर्यपूर्ण बनाता है। दीपदान का भव्य दृश्य देखने योग्य होता है। पूर्व की भांति यह कार्यक्रम इस वर्ष भी ब्रह्म सरोवर में 30 नवंबर 2017 की सांयकाल को आयोजित किया जाएगा।

इस शुभ अवसर पर दीपकों को प्रकाशित करने की यह प्रथा भारत की सबसे अधिक प्रतिष्ठित परंपरा रही है। यह प्रबुद्धता का प्रतीक है। गीता जयंती के दिन पर ब्रह्म सरोवर के पवित्र जल में दीपदान या दीपकों के विसर्जन की प्रथा इस महोत्सव के प्रारम्भिक वर्ष 1989 से चली आ रही है। गीता जयंती महोत्सव पर ब्रह्मसरोवर के पवित्र जल में तैरते हुए दीपक भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविंद से निकली पवित्र गीता के लिए एक उपयुक्त श्रद्धा और सम्मान हैं।

महाभारत के अनुशासन पर्व में तीर्थ स्थलों पर प्रकाश करने हेतु दीप प्रज्जवलित करने के महत्त्व की व्याख्या की गयी है। महाकाव्य के अनुसार, जब कोई व्यक्ति दीपक जलाता है तो वह गहरी दृष्टि एवं उज्ज्वलता से समृद्ध हो जाता है। जो भी व्यक्ति दीपक प्रज्जवलित करता है वह दिव्य क्षेत्र में दीपकों की कतार की भांति सुन्दरता से चमक उठता है। इसके अतिरिक्त इन पवित्र दीपकों को प्रज्जवलित करने वाला व्यक्ति अपनी प्रजाति को प्रकाशित करता है तथा उसकी आत्मा पवित्र हो जाती है एवं उसे व्यवहार के प्रकाश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति मृत्यु के पश्चात दिव्य आकाश में प्रकाशवान प्राणियों की अवस्था को प्राप्त होता है।

धर्मक्षेत्र – कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र भारत का सबसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है एवं यह विश्व के सबसे प्राचीनतम तीर्थ स्थलों में से एक है। कुरुक्षेत्र वैदिक संस्कृति की क्रीड़ास्थली, महाभारत युद्ध की रणस्थली एवं भगवद्गीता की जन्मस्थली है। यहीं भारतीय संस्कृति के बीज बोए गए थे और यहीं पर हिन्दू धर्म के प्राचीन संवेगों ने मानवीय आत्मा को सांसारिक संबंधों से ऊपर उठकर ईश्वर के साथ एक नई और अटूट एकता की शिक्षा भी दी थी।

पौराणिक मान्यता के अनुसार कुरुक्षेत्र का नामकरण राजा कुरु के नाम पर हुआ, जो कि संवरण और ताप्ती के पुत्र थे एवं कौरवों व पांडवों के पूर्वज थे। वामन पुराण के अनुसार, राजा कुरु ने आध्यात्मिक संस्कृति का विकास करने के लिए शिव के बैल और यमराज के भैंसे को जोत कर कुरुक्षेत्र की भूमि पर हल चलाया था। इस पर इंद्र राजा कुरु के सामने आए और उन्होंने राजा से पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं, तो राजा ने उत्तर दिया कि वह इस क्षेत्र में अष्टांगमहाधर्म अर्थात तप, सत्य, क्षमा, दया, शुचिता, दान, योग एवं ब्रह्मचर्य के बीज बोना चाहते हैं। अंत मे जब विष्णु भगवान राजा के सामने आए और उन्होंने खेत में बोए जाने वाले बीजों के बारे में पूछा तो राजा ने उत्तर दिया कि अष्टांगमहाधर्म के बीज उनके अपने शरीर में ही हैं। फिर विष्णु ने उनके शरीर के सैकड़ों टुकड़े कर दिए जो उस क्षेत्र में बिखर गए जिसमें राजा ने हल चलाया था। राजा के इस बलिदान से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने कहा कि अब से राजा कुरु द्वारा जोती गई इस भूमि को धर्मक्षेत्र–कुरुक्षेत्र के नाम से जाना जाएगा और यह क्षेत्र सर्वोच्च धार्मिक महत्व का होगा।

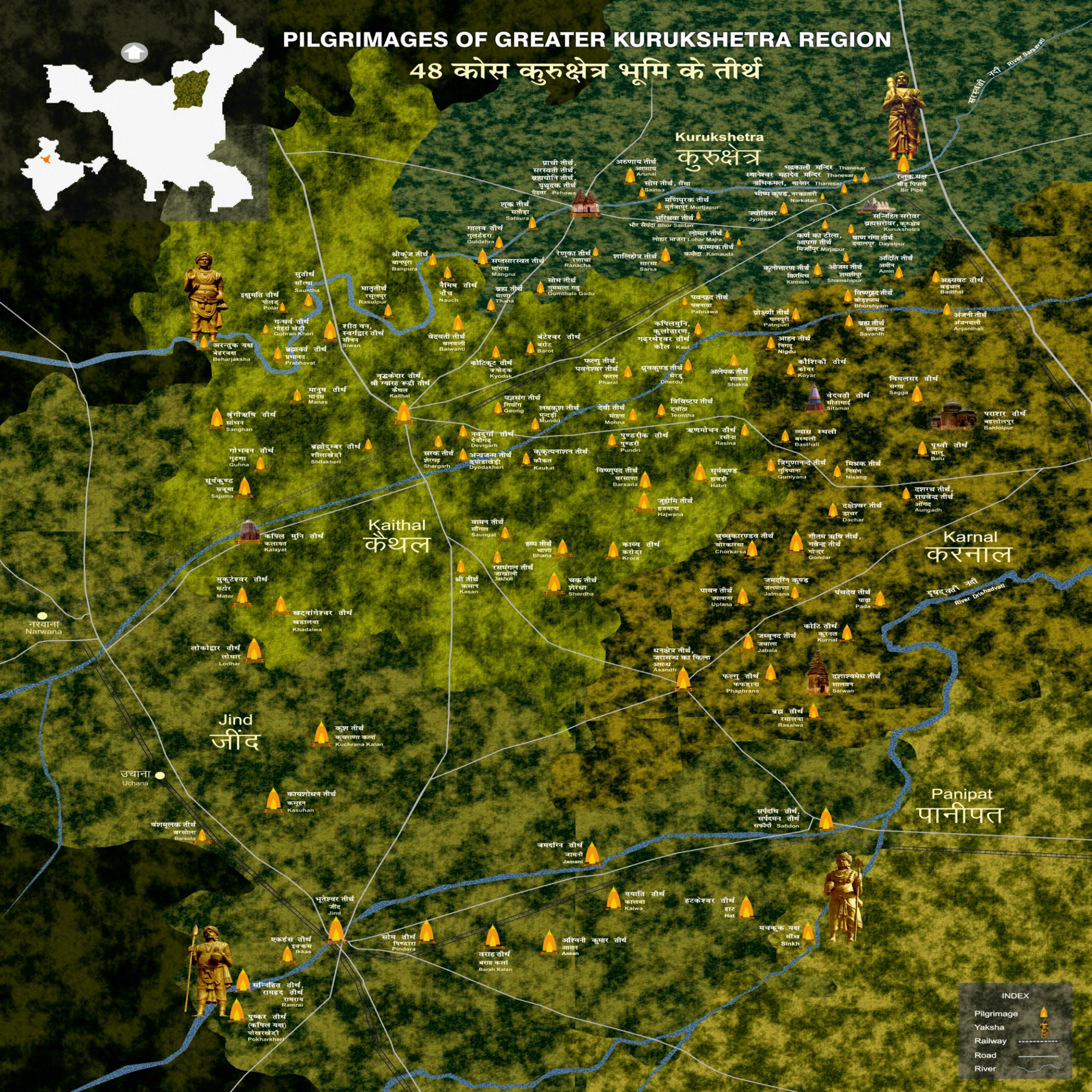

PILGRIMAGES OF GREATER KURUKSHETRA REGION
48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थ
Kurukshetra
कुरुक्षेत्र
Kaithal
कैथल
Karnal
करनाल
Jind
जींद
Panipat
पानीपत
नरवाना
Narwana
उचाना
Uchana
River Saraswati
River Drishadvati
Pehowa
Thanesar
Bir Pipli
Kalayat
Asandh
Safidon
Jind
INDEX
Pilgrimage
Yaksha
Railway
Road
River

48 कोस कुरुक्षेत्र की पावन भूमि के तीर्थस्थल

कुरुक्षेत्र जिले के तीर्थ

1. अरुणाय तीर्थ, अरणाय
2. प्राची तीर्थ, पेहवा
3. सरस्वती तीर्थ, पेहवा
4. ब्रह्मयोनि तीर्थ, पेहवा
5. पृथूदक तीर्थ, पेहवा
6. शालिहोत्र तीर्थ, सारसा
7. भीष्म कुण्ड, नरकातारी
8. बाण गंगा तीर्थ, दयालपुर
9. कुलोत्तारण तीर्थ, किरमिच
10. ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र
11. सन्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र
12. भद्रकाली मंदिर, कुरुक्षेत्र
13. अदिति तीर्थ एवं अभिमन्यु का टीला, अमीन
14. गीता जन्मस्थली, ज्योतिसर
15. सोम तीर्थ, सैंसा
16. शुक्र तीर्थ, सतौड़ा
17. गालव तीर्थ, गुलडेहरा
18. सप्तसारस्वत तीर्थ, मांगना
19. ब्रह्म स्थान, थाना
20. सोम तीर्थ, गुमथलागढु
21. मणिपूरक तीर्थ, मुर्तजापुर
22. भूरिश्रवा तीर्थ, भोर सैयंदा
23. लोमश तीर्थ, लोहार माजरा
24. काम्यक तीर्थ, कमौदा
25. आपगा तीर्थ, दयालपुर
26. कर्ण का टीला, मिर्जापुर
27. नाभिकमल तीर्थ, थानेसर
28. रन्तुक यक्ष, बीड़ पिपली
29. स्थाण्वीश्वर महादेव मंदिर, थानेसर
30. ओजस तीर्थ, शमशीपुर
31. रेणुका तीर्थ, अरनैचा
32. त्रिपुरारी तीर्थ, तिगरी खालसा

जींद जिले के तीर्थ

33. भूतेश्वर तीर्थ, जींद
34. एकहंस तीर्थ, इक्कस
35. रामह्रद तीर्थ, रामराय
36. सन्निहित तीर्थ, रामराय
37. पुष्कर तीर्थ (कपिल यक्ष), पोखरखेड़ी
38. सोम तीर्थ, पिण्डारा
39. वराह तीर्थ, बराहकलां
40. अश्विनी कुमार तीर्थ, आसन
41. जमदग्नि तीर्थ, जामनी
42. ययाति तीर्थ, कालवा
43. पंचनद (हटकेश्वर तीर्थ), हाट
44. सर्पदधि तीर्थ, सफीदों
45. सर्पदमन तीर्थ, सफीदों
46. कायशोधन तीर्थ, कसूहन
47. वंशमूलक तीर्थ, बरसोला
48. खट्वांगेश्वर तीर्थ, खडालवा
49. कुश तीर्थ, कुचराना कलां
50. लोकोद्धार तीर्थ, लोधार

पानीपत जिले का तीर्थ

51. मचक्रुक यक्ष, सिंख

कैथल जिले के तीर्थ

52. पवनह्रद तीर्थ, पबनावा
53. फल्गु तीर्थ (फलकीवन), फरल
54. पवनेश्वर तीर्थ, फरल
55. कपिल मुनि तीर्थ, कलायत
56. पुण्डरीक तीर्थ, पुण्डरी
57. त्रिविष्टप तीर्थ, ट्योंथा
58. कोटिकूट तीर्थ, क्योड़क
59. बिंदुसर तीर्थ, बरोट
60. नैमिष तीर्थ, नौच
61. वेदवती तीर्थ, बलवन्ती
62. वृद्धकेदार तीर्थ, कैथल
63. सरक तीर्थ, शेरगढ़
64. मानुष तीर्थ, मानस
65. नवदुर्गा तीर्थ, देवीगढ़
66. श्री ग्यारह रुद्री तीर्थ, कैथल
67. आपगा तीर्थ, गादली
68. जुहोमी तीर्थ, हजवाना
69. विष्णुपद तीर्थ, बरसाणा
70. यज्ञसंग तीर्थ, गियोंग
71. कपिल मुनी तीर्थ, कौल
72. कुलोत्तारण तीर्थ, कौल
73. गढ़रथेश्वर तीर्थ, कौल
74. मातृ तीर्थ, रसूलपुर
75. सूर्यकुण्ड, हाबड़ी
76. हव्य तीर्थ, भाणा
77. चक्र तीर्थ, शेरधा
78. रसमंगल तीर्थ, सौंगल
79. मुकुटेश्वर तीर्थ, मटोर
80. श्री तीर्थ, कसान
81. श्रीकुंज तीर्थ, बानपुरा
82. इक्षुमति तीर्थ, पोलड़
83. सुतीर्थ, सोंत्था
84. ब्रह्मावर्त तीर्थ, प्रभावत
85. अरन्तुक यक्ष, बेहरजक्ष
86. श्रृंगीऋषि तीर्थ, सांघन
87. गोभवन तीर्थ, गुहणा
88. सूर्यकुण्ड, सजूमा
89. शीत वन (स्वर्गद्वार तीर्थ), सीवन
90. ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ, शीलाखेड़ी
91. अन्यजन्म (धनंजय तीर्थ), ड्योडाखेड़ी
92. देवी तीर्थ, कलशी
93. ध्रुव कुण्ड, धेरडू
94. कुकृत्यनाशन तीर्थ, कौकत
95. काव्य तीर्थ, करोड़ा
96. लव-कुश तीर्थ, मुन्दड़ी
97. वामन तीर्थ, सौंगल
98. ऋणमोचन तीर्थ, रसीना
99. अलेपक तीर्थ, शाकरा
100. देवी तीर्थ, मोहना
101. गन्धर्व तीर्थ, गौहरां खेड़ी

करनाल जिले के तीर्थ

102. वेदवती तीर्थ, सीतामाई
103. मिश्रक तीर्थ, निसिंग
104. आहन तीर्थ, निगदू
105. त्रिगुणानन्द तीर्थ, गुनियाना
106. पावन तीर्थ, उपलाना
107. जम्बूनद तीर्थ, जबाला
108. दशाश्वमेध तीर्थ, सालवन
109. जरासन्ध का टीला, असंध
110. धनक्षेत्र तीर्थ, असंध
111. विमलसर तीर्थ, सग्गा
112. दशरथ तीर्थ, ओंगद
113. पृथ्वी तीर्थ, बालू
114. पराशर तीर्थ, बहलोलपुर
115. दक्षेश्वर तीर्थ, डाचर
116. व्यास स्थली, बस्थली
117. गवेन्द्र तीर्थ (गौतम ऋषि तीर्थ), गोंदर
118. ब्रह्म तीर्थ, सावंत
119. अक्ष्यवट तीर्थ, बड़थल
120. फल्गु तीर्थ, फफड़ाना
121. ज्येष्ठाश्रम तीर्थ, बोड़श्याम
122. कोटि तीर्थ, बोड़श्याम
123. सूर्य तीर्थ, बोड़श्याम
124. विष्णुह्रद तीर्थ, बोड़श्याम
125. ब्रह्म तीर्थ, रसालवा
126. अंजनी तीर्थ, अंजनथली
127. जमदग्नि कुण्ड, जलमाणा
128. सुदिन एवं नर्वदा तीर्थ, ओंकार का खेड़ा
129. सोम तीर्थ, समाना बाहु
130. चुच्चुकारण्डव तीर्थ, चोरकारसा
131. कोटि तीर्थ, कुरनल
132. पंचदेव तीर्थ, पाढ़ा
133. प्रोक्षणी तीर्थ, पल्लपुरी
134. कौशिकी तीर्थ, कोयर

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि

कुरुक्षेत्र अर्थात 48 कोस कुरुक्षेत्र की पावन भूमि सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों के मध्य स्थित है। यह क्षेत्र हरियाणा के पांच राजस्व जिलों- कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, जींद और पानीपत तक विस्तृत है।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार प्राचीन कुरुक्षेत्र के चारों कोनों पर चार यक्ष स्थित थे। उत्तर-पूर्व (बीड़ पिपली, कुरुक्षेत्र) में रन्तुक यक्ष, उत्तर-पश्चिम (बेहर जख, कैथल) में अरन्तुक यक्ष, दक्षिण-पश्चिम (पोखरखेड़ी, जींद) में कपिल यक्ष और दक्षिण-पूर्व (सींख, पानीपत) में मचक्रुक यक्ष चारों ओर से इस क्षेत्र की रक्षा करते थे। यह पवित्र क्षेत्र 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के नाम से लोकप्रिय है।

इस क्षेत्र के अन्तर्गत कभी 360 तीर्थस्थल स्थित थे। कालांतर में इस क्षेत्र के अनेकों तीर्थ विलुप्त होते गये। कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा विगत वर्षों में इन तीर्थों में से 134 तीर्थों का सर्वेक्षण किया जा चुका है और आने वाले समय में अन्य तीर्थों की सर्वेक्षण की भी योजना है। यह सभी तीर्थ आज भी तीर्थ यात्रियों एवं श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धा के विषय हैं।

प्राचीन साहित्य, राजस्व रिकार्ड एवं लौकोक्तियों के आधार पर तीर्थों की पहचान की जाती रही है। इस क्षेत्र के गावों के लोग मृतकों के भस्मावशेष या तो सरस्वती या फिर 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि में बहने वाली इसकी सहायक नदियों में प्रवाहित करते हैं। जबकि कुरुक्षेत्र के इस पवित्र क्षेत्र के बाहर रहने वाले लोग मृतकों की अस्थियों का विसर्जन हरिद्वार जाकर गंगा में करते हैं। इस क्षेत्र के तमाम तीर्थ स्थलों पर लोग अपने पुरखों के निमित श्राद्ध, दान एवं यज्ञ भी करते हैं।

महाभारत कथा प्रसंग, अंकोरवाट

दक्षिण-पूर्व एशिया में कुरुक्षेत्र और महाभारत की धरोहर

कुरुक्षेत्र की प्रतिष्ठा धर्मक्षेत्र या सत्य की भूमि के रूप में थी। कुरुक्षेत्र को दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में ईसा की उत्तरवर्ती शताब्दियों में बहुत सम्मान प्राप्त था। गुप्त काल के समय इस क्षेत्र में कुरुक्षेत्र की धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्थल के रूप में काफी प्रतिष्ठा थी। लाओस से मिले एक शिलालेख से पता चलता है कि लाओस के राजा श्रीदेवानिक ने 5वीं शती ई. के उत्तरार्द्ध में अपने देश में एक नये कुरुक्षेत्र की स्थापना की थी।

लाओस का यह कुरुक्षेत्र महात्म्य कुरुक्षेत्र भूमि की पवित्रता एवं इसके धार्मिक महत्व को संकेतित करता है। इस शिलालेख में कुरुक्षेत्र को तीनों लोकों के सभी तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ बताया गया है।

कंबोडिया के प्राह विहार से मिले 1037-38 ई. के एक अन्य शिलालेख से विदित होता है कि कंबोडिया के शाही अभिलेखागार के संरक्षक सुकर्मण कुरुक्षेत्र के ही मूल निवासी थे, जिन्हें राजा सूर्यवर्मन द्वारा उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिये विभेद नामक गांव परितोषिक स्वरूप प्रदान किया गया था। सुकर्मण ने इस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र रखा। शिलालेख इस तथ्य पर भी प्रकाश डालता है कि कुरुक्षेत्र के मूल निवासियों ने सुदूर पूर्व ऐशियाई देशों में बड़े उत्साह के साथ भारतीय धर्म एवं दर्शन का प्रचार किया।

रामायण एवं महाभारत के उद्धरण अंकोरवाट मंदिर में भी चित्रित हैं। इसके साथ ही बाली, इंडोंनेशिया में संग्रहित महाभारत का स्थानीय संस्करण दक्षिण-पूर्व एशिया में इस महाकाव्य की लोकप्रियता का स्मरण कराता है। विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं और लोगों एवं स्थानों के नाम से प्रमाणित होता है कि इस महाकाव्य का दक्षिण-पूर्व एशिया की संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव है।

अमीन (कुरुक्षेत्र)के पुरातात्विक टीले से प्राप्त
शुंगकालीन (द्वितीय शती ई. पूर्व) यक्ष एवं यक्ष-यक्षिणी की प्रस्तर मूर्तियां

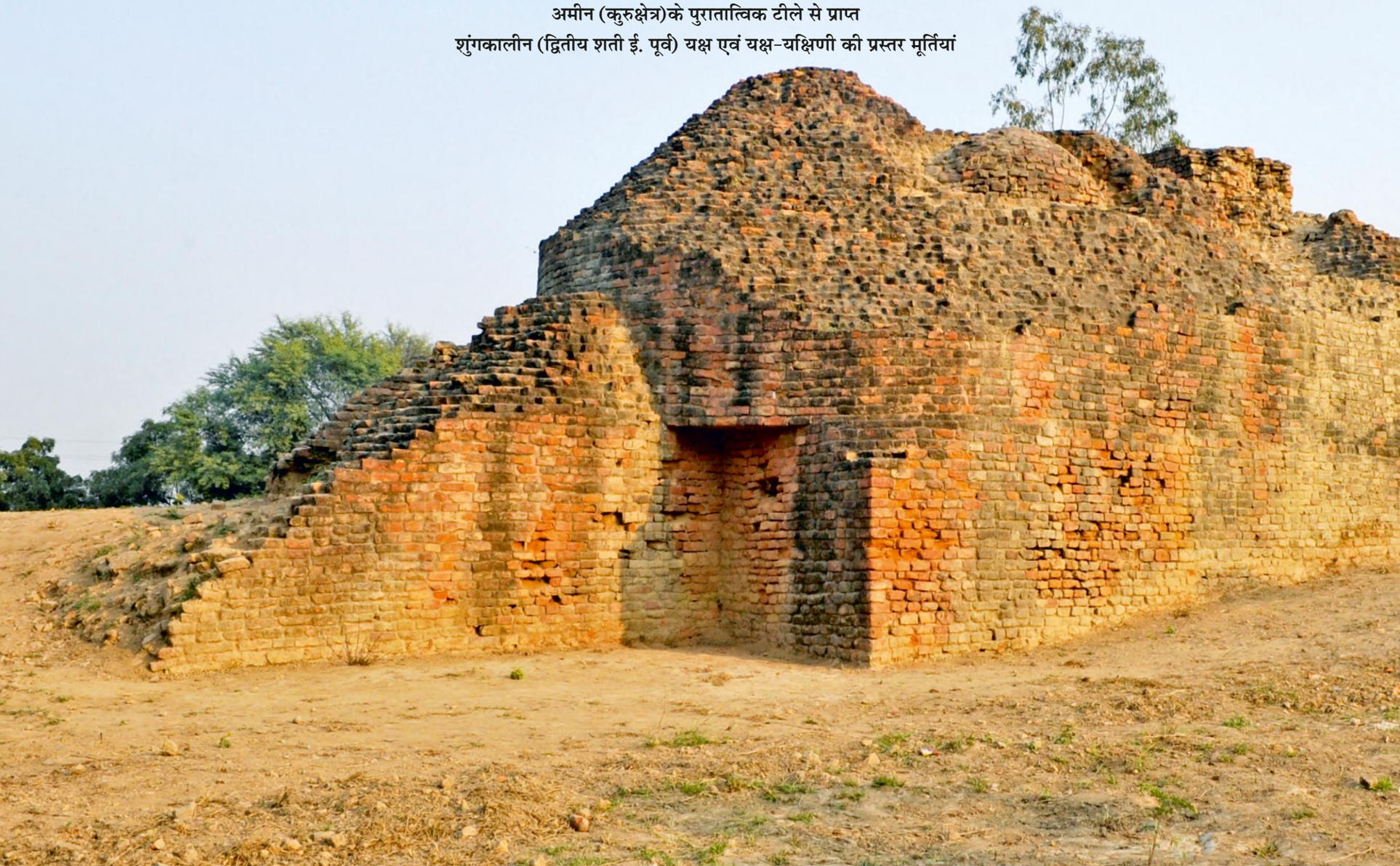

ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र के समीप बौद्ध स्तूप

कुरुक्षेत्र की बौद्ध धरोहर

कुरुक्षेत्र बौद्धकालीन 16 महाजनपदों में से एक प्रमुख जनपद कुरु राज्य का अभिन्न अंग था। भगवान बुद्ध के समय, कुरु देश के लोगों की उनके ज्ञान, उदारता और शारीरिक गठन के चलते बड़ी प्रतिष्ठा थी।

यहां के लोग अष्टांग महाधर्म का पालन करते थे जिसे बाद में बौद्धों ने कुरुधम्म नाम दिया। कहा जाता है कि बुद्ध की यात्रा के समय कुरु देश, धन-धान्यपूर्ण तथा ज्ञान-विज्ञान के लिए समस्त भारत में विख्यात था। इसी कारण बुद्ध को कुरु लोगों को बौद्ध धर्म में धर्मांतरित करने के लिये सर्वाधिक गहन एवं बुद्धिमत्तापूर्ण प्रवचन देने पड़े।

थुल्लकोठित और कम्मासधम्म का बौद्ध साहित्य में कई बार उल्लेख हुआ है, जहां भगवान बुद्ध कुरु देश में अपने प्रवास के दौरान ठहरे थे। प्रसिद्ध बौद्ध साध्वी नंदुत्तरा और नित्तकालिका कम्मासधम्म नगर की ही रहने वाली थी। कुरुक्षेत्र से 15 किलोमीटर दूर झांसा रोड पर ठोल-कुठरी गांव में एक प्राचीन टीले से मिले पुरातात्विक महत्व के चित्रित मृदभांड और अन्य मृदपात्र इस बात के प्रमाण है कि यही पुरातात्विक स्थल कभी साहित्य में वर्णित थुल्लकोठित नगर रहा होगा, जहां भगवान बुद्ध ने अपनी कुरुक्षेत्र यात्रा के समय प्रवास किया था। इसी प्रकार कुरुक्षेत्र से 15 किलोमीटर दूर कमौदा नामक गांव बौद्धकालीन कम्मासधम्म हो सकता है, जहां बुद्ध के चरण पड़े थे। बौद्ध स्तूपों के अवशेष कुरुक्षेत्र, असंध (करनाल), चनेती एवं आदिबद्री (यमुनानगर) से मिले हैं। कुरुक्षेत्र के निकट अमीन नामक गांव के पुरातात्विक टीले से प्राप्त शुंगकालीन (द्वितीय शती ई. पूर्व) यक्ष एवं यक्ष-यक्षिणी की प्रस्तर मूर्तियों से भी इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के प्रमाण मिलते हैं।

प्राचीन स्थाण्वीश्वर नगर के भग्नावशेष

पौराणिक नगर स्थाण्वीश्वर के उत्खनन से प्राप्त अवशेष

थानेसर अथवा स्थाण्वीश्वर नगर गुप्त काल में राजनैतिक सत्ता का केंद्र बन गया था। स्थाण्वीश्वर का अर्थ है भगवान शिव का निवास स्थान। थानेसर का उल्लेख सर्वप्रथम प्रसिद्ध ग्रीको–रोमन भूगोलविद टोलेमी की कृति में मिलता है जिसमें वेतांग कैसर नामक एक स्थान का उल्लेख है। विद्वान इसे स्थाण्वीश्वर मानते हैं।

ऐतिहासिक एवं साहित्यिक विवरणों के अनुसार थानेसर के वर्धन शासकों के पूर्वज, राजा पुष्पभूति ने स्थाण्वीश्वर नगर की नींव रखी थी। सरस्वती नदी के तट पर स्थित यह नगर श्रीकंठ जनपद की राजधानी था। सातवीं शती ई. में प्रभाकरवर्धन और उनके पुत्र हर्षवर्धन के शासनकाल में स्थाण्वीश्वर नगर उत्तर भारत की राजनैतिक सत्ता का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। सातवीं शताब्दी के मध्य में हर्षवर्धन द्वारा अपनी राजधानी कन्नौज स्थानांतरित करने पर थानेसर का राजनीतिक महत्व कम होने लगा। साहित्यिक विवरणों से पता लगता है कि इस समय थानेसर में शैव मत की प्रधानता थी।

हर्षवर्धन के राजकवि एवं संस्कृत के महान विद्वान बाणभट्ट ने वर्धन शासकों की राजधानी स्थाण्वीश्वर का विस्तृत वर्णन करते हुए कहा है कि नगर चारों ओर से विशाल परकोटे एवं खाई से घिरा था। नगर के मध्य में दो मंजिला राजगृह 'धवलगृह' कहलाता था।

बाणभट्ट द्वारा वर्णित स्थाण्वीश्वर नगर के प्रमाण थानसेर के टीले, जिसे हर्ष का टीला भी कहा जाता है, की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। टीले के पुरातात्विक उत्खनन से मिली एक विशाल महलनुमा संरचना व अन्य पुरावस्तुओं से साहित्यगत विवरणों की पुष्टि होती है।

शेख चहेली का मकबरा, थानेसर

सूफियों की शरणस्थली–कुरुक्षेत्र

सूफी मत इस्लाम के गूढ़ पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है, जो इस्लाम के रहस्यमय आयामों के बारे में बताता है। 12वीं शती ई. के बाद से सूफी सम्प्रदाय भारत भूमि में यत्र–तत्र स्थापित हो चुके थे। इसी समय कुरुक्षेत्र स्थित थानेसर में चिश्तिया व नक्शबन्दी सूफी सिलसिले स्थापित हुए। ईसा की 16वीं शती में शेख हजरत कुतुब जलालुद्दीन थानेसरी देश के प्रमुख सूफी संतों में एक थे। मुगल सम्राट अकबर जब कुरुक्षेत्र आये तो वे उनकी खानकाह पर भी गये। उनकी कब्र शेख चहेली के मकबरे के पास स्थित है। मकबरे के गुंबदों का शीर्ष एक औंधे फूल की शक्ल में और गोलाकार है।

शेख चेहली के मकबरे के निर्माण का श्रेय शाहजहां के बड़े पुत्र दाराशिकोह को दिया जाता है जो स्वयं भी कादरिया सिलसिले के सूफी मत में दीक्षित थे। मकबरा शेख चहेली बन्नूरी को समर्पित है, जिन्हें अब्दुल रहीम, अब्दुल करीम या अब्दुल रज्जाक के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि शेख चहेली भी दाराशिकोह के आध्यात्मिक गुरु थे।

यह मकबरा अष्टकोणीय आधार पर निर्मित है। मकबरे के हर हिस्से में मेहराबदार आले बने हैं और प्रत्येक आला संगमरमर के छिद्रित पर्दों से ढका है। ऊपर गोलाई लिये ग्रीवा है जहां पर नाशपाती के आकार का गुंबद है। इस मकबरे को कई अक्सर उत्तर भारत का ताजमहल भी कहा जाता रहा है।

गुरुद्वारा छवीं पातशाही, कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र की सिख धरोहर

कुरुक्षेत्र सिखों के लिए भी एक पवित्र स्थान रहा है। सिख गुरुओं ने समय-समय पर कुरुक्षेत्र का भ्रमण किया। उनकी स्मृति में कुरुक्षेत्र में अनेक गुरुद्वारे बनाये गये। सिख गुरुओं के कुरुक्षेत्र भ्रमण के प्रसंग मॉकलिफ के वृतान्तों के साथ-साथ भाई संतोख सिंह द्वारा लिखित सिखों के पारंपरिक साहित्य 'नानक प्रकाश' और 'गुरु प्रताप सूरज' में भी मिलता है।

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र आये थे। गुरु के दशनों एवं उनके उपदेशों को सुनने के लिए इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां आए थे। गुरु नानक के लिए अपनी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिय यह बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर था। गुरु नानक की कुरुक्षेत्र यात्रा की स्मृति में ब्रह्मसरोवर के समीप सिद्धवटी नामक गुरुद्वारा बनाया गया है।

गुरु अमरदास (1479-1574) ने अपने जीवनकाल में अनेक तीर्थों का भ्रमण किया। उन्होंने कुरुक्षेत्र एवं पेहवा (प्राचीन पृथूदक) स्थित तीर्थों का भ्रमण किया। गुरु तेग बहादुर (1664-1675) ने भी सूर्यग्रहण के दौरान कुरुक्षेत्र का भ्रमण किया और अपने प्रवास के दौरान भक्तों के सम्मुख सतनाम पर चर्चा की। गुरुद्वारा छवीं, सातवीं, नौवीं और दसवीं पातशाही क्रमशः गुरु हर गोविंद, गुरु हर राय, गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह की याद में कुरुक्षेत्र में बनाए गए हैं।

कुरुक्षेत्र निर्मल साधुओं की गतिविधियों का केंद्र भी था, जिन्होंने यहां अपने आश्रमों का निर्माण किया। निर्मल संप्रदाय के एक प्रसिद्ध संत मान सिंह ने अपना निवास सन्निहित सरोवर के पास बनाया। उन्होंने अध्यात्म के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया। उनकी प्रमुख कृतियों में अध्यात्म रामायण, भावसारमृत और मोक्षपंथ प्रकाश इत्यादि सम्मिलित हैं।

कुरुक्षेत्रं महापुण्यं राहुग्रस्ते दिवाकरे।
दिवा वा यदि वा रात्रौ शुक्लतीर्थं महाफलम्॥

मत्स्य पुराण 191/12

सूर्य के राहुग्रस्त होने पर कुरुक्षेत्र में महान पुण्य मिलता है,
दिन हो या रात्रि, यह शुक्लतीर्थ महान फल देने वाला है।

ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र

सूर्य आराधना का केंद्र कुरुक्षेत्र

भारत के वैदिक एवं उत्तर-वैदिक साहित्य में सूर्य देवता का काफी महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति के आदि काल से ही भारत वर्ष में सूर्य भगवान की पूजा प्रचलित है।

सूर्य आराधना के तमाम साक्ष्यों का वैदिक साहित्य में वर्णन मिलता है। ब्राह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदों में सूर्य भगवान की सर्वोच्चता के काफी उद्धरण मिलते हैं। महाभारत में सूर्य भगवान कई बार मानवीय रूप में प्रकट होते हैं। पांडवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर सूर्य भगवान के सबसे बड़े उपासक थे, जबकि कहते हैं कि महाभारत के एक अन्य नायक कर्ण सूर्य के ही पुत्र थे।

कुरुक्षेत्र भारत में उन प्राचीन स्थलों में से एक है, जहां सूर्य भगवान की पूजा होती है। 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि में एक दर्जन से अधिक तीर्थ स्थल ऐसे हैं, जो सूर्य उपासना से जुड़े हैं। इन तीर्थों के सरोवर सूर्यकुण्ड कहलाते हैं। कुरुक्षेत्र में स्थित कई पवित्र जल कुण्ड सूर्य भगवान को ही समर्पित हैं।

दीर्घकाल से कुरुक्षेत्र के पवित्र सरोवरों में स्नान करने हेतु देश-विदेश से श्रद्धालु आते रहते हैं। भागवत पुराण में इसका प्रारंभिक और सबसे प्राचीनतम उद्धरण मिलता है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण और उनके सगे-संबंधियों के द्वारका एवं मथुरा से सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में आने का वर्णन मिलता है। इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण को अपने पालक माता-पिता नंद-यशोदा और ब्रज क्षेत्र के अपने बचपन के संगी-साथियों से मिलने का भी अवसर मिला था। सूर्यग्रहण के अवसर पर कई सिख गुरुओं ने भी कुरुक्षेत्र की यात्रा की। 1567 में सूर्य ग्रहण के मौके पर मुगल सम्राट अकबर भी कुरुक्षेत्र आए थे।

पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात्सरस्वती।
सरस्वत्याश्च तीर्थानि तीर्थेभ्यश्च पृथूदकम्।। महाभारत

पुण्य क्षेत्रों में कुरुक्षेत्र प्रमुख है, कुरुक्षेत्र से भी पुण्यत्तम सरस्वती नदी है।
सरस्वती से भी पुण्यत्तम उसके तटों पर स्थित तीर्थ हैं तथा तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ पृथूदक तीर्थ है।

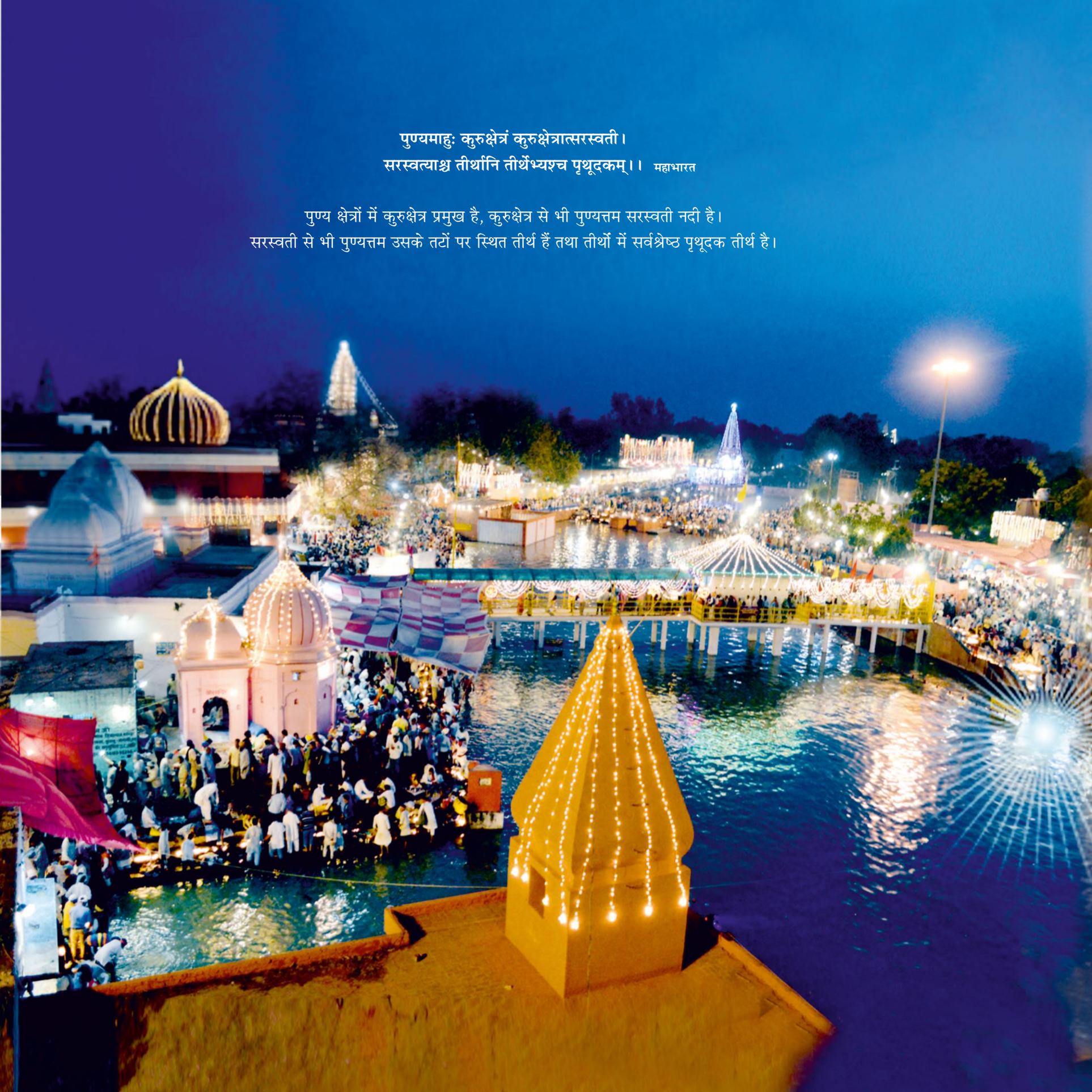

सरस्वती तीर्थ, पेहवा, कुरुक्षेत्र

सरस्वती की जीवंत धरोहर - पृथूदक तीर्थ

पृथूदक तीर्थ का संदर्भ महाभारत एवं पुराणों में मिलता है। महाभारत के अनुसार पुरु वंश के राजा मतिनार ने यहां पर सरस्वती नदी के किनारे बहुत सारे यज्ञ किए थे। राजा द्वारा सम्पन्न किये गए यज्ञों से अविभूत हो कर सरस्वती ने उनका पति रूप में वरण किया। महाभारत के अनुसार पांडव सरस्वती नदी को पार करके कुरुक्षेत्र के प्रसिद्ध काम्यक वन में पहुंचे थे। पांडवों के वंशज असीमकृष्ण ने भी पृथूदक में सरस्वती नदी के किनारे कई दीर्घकालीन यज्ञ किए थे।

प्राचीन पृथूदक वर्तमान में पेहवा कहलाता है। यह तीर्थ पितरों के निमित्त किये जाने वाले श्राद्ध, तपर्ण आदि धार्मिक अनुष्ठानों के लिए समस्त पश्चिमोत्तर भारत में प्रसिद्ध है। तीर्थ के पूर्वी प्रवेश द्वार के पास लगभग 9वीं-10वीं शती की बालुका पत्थर से निर्मित अलंकृत चोखट को तीर्थ परिसर में स्थित राधा-कृष्ण मंदिर में स्थापित किया गया है। यह चौखट मध्यकालीन पृथूदक तीर्थ पर भव्य मन्दिरों के निर्माण की साक्षी है। तीर्थ परिसर में स्थित गरीबनाथ मंदिर की दीवार से लगे प्रतिहार राजा मिहिरभोज के समय के शिलालेख में पृथूदक तीर्थ पर चैत्र मास में लगने वाले प्रेत चतुर्दशी मेले का उल्लेख हुआ है। अभिलेख के अनुसार इस मेले में घोड़ों के क्रय-विक्रय से मिलने वाली कर राशि का उपयोग मंदिरों के रखरखाव हेतु किया जाता था।

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न कुत्रचित्॥ महाभारत

धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के विषय में जो उल्लेख
अन्यत्र अन्य धर्मग्रन्थों में मिलते हैं वही महाभारत में भी मिलते हैं
परन्तु जो महाभारत में उपलब्ध नही हैं, वह अन्यत्र भी कहीं नहीं हैं।

वेदव्यास से सुनकर महाभारत को लिपिबद्ध करते हुए गणेश
श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र

अतुलनीय महाकाव्य
महाभारत

महाभारत मानव जाति को ज्ञात प्राचीनतम साहित्यिक ग्रंथों में से एक है। यह विश्व का सबसे विशाल काव्य संग्रह है।इसमें लगभग एक लाख से अधिक श्लोक हैं। यह इलियड और ओडिसी दोनों महाकाव्यों के संयुक्त आकार से करीब आठ गुना बड़ा है। महाभारत की रचना कृष्ण द्वैपायन व्यास ने की थी और माना जाता है कि गणेश ने इसे लिपिबद्ध किया था। महाभारत को बहुधा पंचम वेद या पांचवां वेद भी कहा जाता है, जिसमें ज्ञान-विज्ञान की लगभग हर शाखा की जानकारी सम्मिलित है। इस महाकाव्य में इतिहास, किंवदंतियों, मिथकों और लोक कथाओं, दृष्टान्तों के साथ-साथ धर्म और दर्शन, राजनीति, युद्ध कला, नैतिकता एवं वीर गाथाओं पर आधारित सामग्री को इस प्रकार गूँथा गया है जिससे यह महाकाव्य भारतीय साहित्य, कला, नाटक, नृत्य, गीत, काव्य आदि अनेक विधाओं के एक अमूल्य विश्वकोष का रुप ले चुका है।

एक लेखक ने सच ही कहा है कि इतिहास में हर जनसमुदाय अपनी एक श्रेष्ठ उपलब्धि पर गर्व करता है, जिस पर उसका अतीत और भविष्य निर्भर करता है। यह श्रेष्ठ उपलब्धि किसी जाति विशेष को जोड़ने व उसकी समृद्धि के संकल्प को व्यक्त करती है। यहूदियों का मिस्र से महापलायन, मीडियनों पर पारसियों तथा ग्रीकों की विजय विश्व इतिहास की कुछ ऐसी उपलब्धियां हैं जिनका उद्धरण वह अनेक अवसरों पर तर्क देने, राजनैतिक दावे करने, भाषा को आलंकारिक प्रभाव देने, संकट के समय देश भक्ति की भावना जगाने तथा अन्त में पछतावे के रूप में करते हैं। भारतीयों के लिए यह श्रेष्ठ उपलब्धि निः सन्देह महाभारत युद्ध है, जो कि उनके इतिहास की केंद्रीय घटना है तथा यह उनके स्वर्णिम युग की अन्तिम घटना मानी जा सकती है। महाभारत से पूर्व का युग दिव्य ज्ञान एवं वीरतापूर्ण कार्यों से परिपूर्ण माना जाता है।

चक्रव्यूह में अभिमन्यु, फड़ शैली, राजस्थान
श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र

प्राचीन भारतीय सैन्य विज्ञान का कोष
महाभारत

महाभारत, प्राचीन भारतीय युद्ध कला और प्राचीन भारतीयों की सैन्य प्रतिभा को दर्शाता है। महाभारत में विभिन्न प्रकार के सैन्य संगठनों की विविधता, सिद्धांतों एवं गूढ़ अस्त्र-शस्त्रों के संदर्भ मिलते है। इसमें सेनाओं के प्रकार, सैन्य भर्ती, आक्रमण एवं सुरक्षा में प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र, प्रक्षेपास्त्रों, सैन्य अभियानों एवं प्रशिक्षण, युद्ध क्षेत्र के चयन, क्षेत्र में सेना की स्थिति, दुर्ग एवं सैन्य शिल्प, शस्त्रागारों और उनके रखरखाव तथा युद्ध के नैतिक सिद्धांतों की विस्तार से चर्चा की गई है।

महाभारत युग में रथ, गज सेना, घुड़सवार सेना और पैदल सेना, ये सेना के चार प्रमुख अंग होते थे। इसीलिए इसे चतुरंग सेना भी कहा जाता था। युद्ध के समय सेनानायक अपनी सेना को जटिल व्यूहों से सज्जित करते थे। महाभारत के अनुसार कौरवों और पांडवों द्वारा महाभारत के अठारह दिनों के युद्ध में विभिन्न प्रकार की व्यूह संरचनाएं बनायी गई थी। इन महत्वपूर्ण व्यूह संरचनाओं में चक्रव्यूह, सूचीव्यूह, मकरव्यूह, गरुड़व्यूह, कूर्मव्यूह, क्रौंचव्यूह और अर्द्धचंद्रव्यूह आदि प्रमुख व्यूह थे। महाभारत युद्ध के तेरहवें दिन कौरव सेनानायक द्रोणाचार्य द्वारा निर्मित चक्रव्यूह का भेदन करते हुए ही अर्जुन पुत्र अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुए थे।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्॥
भगवद्गीता - 4/7

हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है,
तब-तब ही मैं अपने स्वरुप को रचता हूँ अर्थात्
साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

भगवद्गीता की जन्मस्थली-ज्योतिसर तीर्थ

तीर्थ स्थल

ज्योतिसर

दिव्य गीत - गीता जन्मस्थली

श्रीमद्भगवद्गीता की जन्मस्थली ज्योतिसर कुरुक्षेत्र स्थित परम पावन स्थान है। ऐसा माना जाता है कि महाभारत युद्ध से पूर्व इसी स्थल पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश दिया गया था। कहा जाता है कि अपनी हिमालय यात्रा के समय आदि गुरु शंकराचार्य ने सर्वप्रथम इस स्थान को चिन्हित किया था। सन् 1850 में महाराजा काश्मीर द्वारा यहां पर एक शिव मन्दिर की स्थापना की गई थी। इसके पश्चात सन 1924 में महाराजा दरभंगा ने यहां पर गीता उपदेश के साक्षी वट वृक्ष के चारों ओर एक चबूतरे का निर्माण करवाया।

तीर्थ के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुए सन 1967 में कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य द्वारा मुख्य चबूतरे के साथ गीता उपदेश रथ स्थापित करवाया गया तथा साथ ही चबूतरे के नीचे परिक्रमा पथ के साथ आदि गुरु शंकराचार्य का मन्दिर भी बनवाया गया था। इस तीर्थ परिसर में अनेक मन्दिर हैं। मन्दिर परिसर में ही दक्षिण की ओर तीर्थ सरोवर है। तीर्थ परिसर में निर्मित चबूतरे के नीचे रखे गए 9-10 शती ई. के मन्दिर के स्तम्भ के अवशेष से भी इस तीर्थ के ऐतिहासिक महत्व का पता चलता है।

सरस्वती नदी के पावन तट पर स्थित इस तीर्थ के आस-पास 'धूसर चित्रित मृदभाण्डीय संस्कृति' के अवशेष मिलते हैं जिसका सम्बन्ध पुरातत्वविद् महाभारत काल से जोड़ते हैं। तीर्थ के उत्तर-पूर्व की ओर स्थित जोगनाखेड़ा नामक ग्राम के पुरातात्विक उत्खनन से उत्तर हड़प्पा कालीन एवं धूसर चित्रित मृदभाण्डीय संस्कृति के अवशेष मिले हैं जिनका संग्रह कुरुक्षेत्र स्थित श्रीकृष्ण संग्रहालय में किया गया है।

ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र

तीर्थ स्थल

ब्रह्म सरोवर

ब्रह्मसरोवर का सम्बन्ध सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से माना जाता है। प्राचीन काल में यह सरोवर रामह्रद व समन्तपंचक के नाम से भी प्रसिद्ध रहा। लौकिक आख्यानों के अनुसार इस सरोवर की सर्वप्रथम खुदाई राजा कुरु ने करवाई थी। इसी स्थल पर प्रजापति ब्रह्मा ने सर्वप्रथम यज्ञ किया था। कुरुक्षेत्र प्राचीन काल में ब्रह्मा की उत्तरवेदि, ब्रह्मवेदि व समन्तपंचक नाम से भी जाना जाता रहा है। कुरुक्षेत्र तीर्थ व ब्रह्म सरोवर एक दूसरे के पूरक व अभिन्न भाग रहे हैं। ब्रह्म सरोवर दो भागों में विभक्त है। लौकिक आख्यानों के अनुसार पूर्वी एवं पश्चिमी भाग के मध्य स्थित भूमि में महाभारत युद्ध के उपरान्त महाराजा युधिष्ठिर ने एक विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया था। मध्यकाल में मुस्लिम शासकों द्वारा इस भूमि में सैनिकों के लिए छावनी का निर्माण करवाया गया था जोकि सरोवर में स्नान करने वाले तीर्थ यात्रियों से जजिया कर वसूल करते थे। सन् 1567 में अपनी कुरुक्षेत्र यात्रा के समय अकबर ने तीर्थ यात्रियों पर लगने वाले इस कर को समाप्त किया था। औरंगजेब के समय फिर से तीर्थयात्रियों से यह कर लिया जाने लगा। अन्त में अठारहवी शती में मराठों द्वारा यह कर समाप्त करवाया गया। इसी स्थल पर प्राचीन द्रौपदी कूप निर्मित है जिसे चन्द्र कूप भी कहा जाता है। इस सरोवर की विशालता को देखते हुए ही अकबर के दरबारी कवि एवं लेखक अबुल फजल ने इसे 'लघु समुद्र' की संज्ञा दी थी।

सूर्य ग्रहण के समय इस सरोवर में किया गया स्नान हजारों अश्वमेध यज्ञों के फल के बराबर माना जाता है। यह सरोवर ऐशिया के मानव निर्मित सरोवरों में सबसे विशाल है।

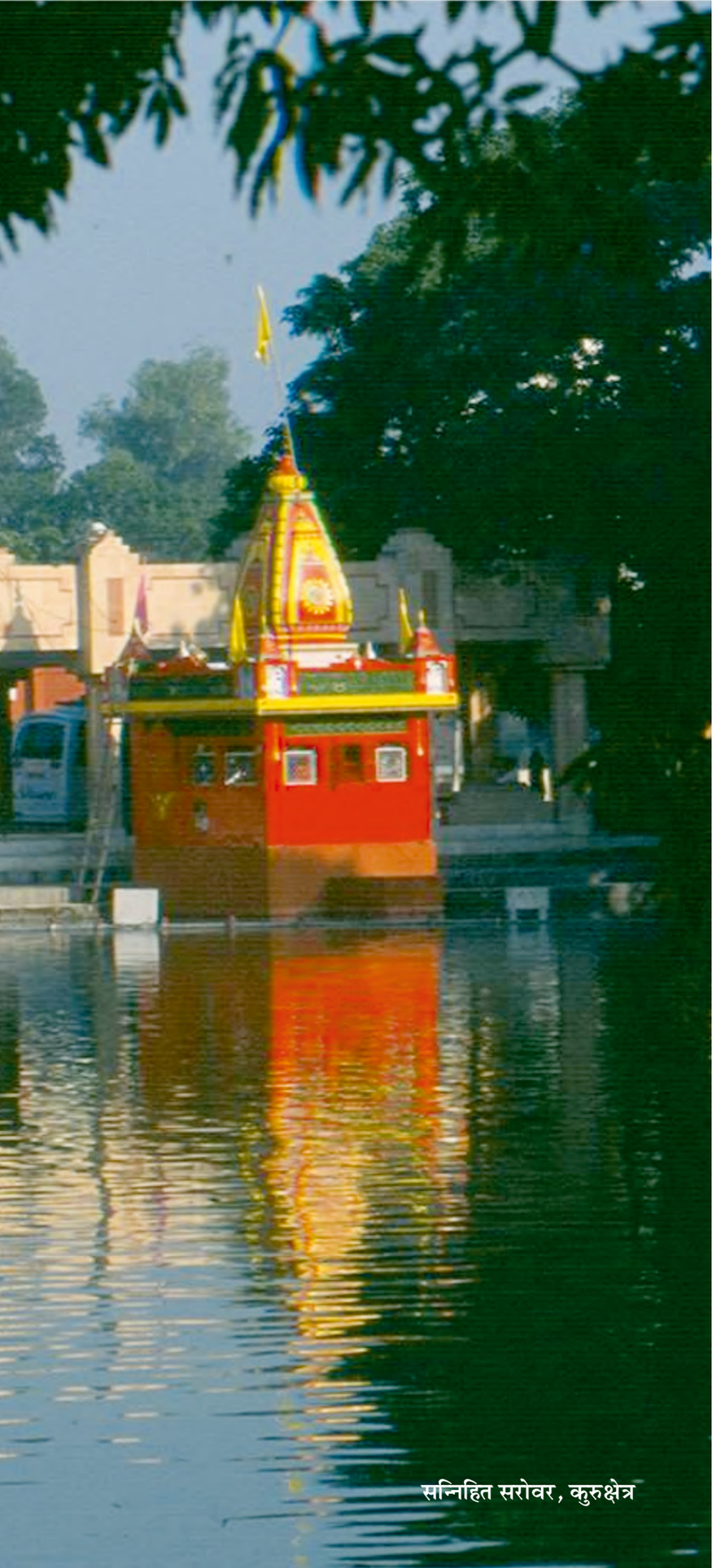

सन्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र

तीर्थ स्थल

सन्निहित सरोवर

सन्निहित सरोवर कुरुक्षेत्र भूमि स्थित प्राचीन सरोवरों में से एक है। सन्निहित का अर्थ एकत्र होने अथवा समाने से है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार प्रत्येक अमावस्या तथा सूर्यग्रहण के अवसर पर पृथ्वी के सारे तीर्थ इस सरोवर के जल में एकत्र हो जाते हैं। इसे सात सरस्वतियों का संगम भी कहा जाता है। वामण पुराण के अनुसार यहां अमावस्या व सूर्यग्रहण के अवसर पर किया गया स्नान हजारो अश्वमेध यज्ञो के फल के बराबर माना जाता है। सूर्यग्रहण के अवसर पर लाखो की संख्या में श्रद्धालु इस सरोवर में मोक्ष प्राप्ति हेतु स्नान करने आते हैं। इस सरोवर में ब्रह्मा, विष्णु व शिव का वास कहा जाता है। पुराणों के अनुसार इस तीर्थ के वास से ही शिव स्थाणु कहलाए। इसी तीर्थ के तट पर देवकार्य हेतु महर्षि दधीचि ने अपनी अस्थियां इन्द्र को दान दी थी जिससे बने वज्र से इन्द्र ने वृतासुर को मारा था। इस सरोवर पर अकस्मात मृत्यु को प्राप्त हुई आत्माओं की मुक्ति हेतु तपर्ण एव पिण्डदान करने का विशेष महत्व है।

भागवत पुराण के अनुसार कुरूक्षेत्र के इसी सरोवर पर खग्रास सूर्यग्रहण के समय भगवान श्रीकृष्ण की भेंट ब्रजमण्डल से आये अपने सगे सम्बन्धियों तथा बचपन के साथी गोप-गोपियों से हुई थी। इस अवसर पर यहां भारत वर्ष के अनेक राज्यों से अनेक राजा महाराजा आये थे। यहीं पर भगवान श्रीकृष्ण ने विरह व्यथा से पीड़ित गोपियों को आत्म ज्ञान की दीक्षा भी दी थी। सरोवर के तट पर सूर्य-नारायण, ध्रुव नाराण तथा लक्ष्मी-नारायण मन्दिर स्थित है। तीर्थ परिसर में स्थापित ब्रिटिश कालीन अभिलेखों से भी इस सरोवर की पवित्रता एव महत्ता का पता लगता है।

भद्रकाली शक्तिपीठ, कुरुक्षेत्र

तीर्थ स्थल

भद्रकाली शक्तिपीठ

भद्रकाली मन्दिर की गणना भारतवर्ष के 51 शक्तिपीठो में होती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु के चक्र से कटकर सती के देह की दाहिने पांव की ऐड़ी यहां स्थित देवी कूप अथवा सती कूप में गिरी थी।

पीठ की अधिष्ठात्री देवी सावित्री तथा देवी के भैरव स्थाणु कहे जाते हैं जिनका मन्दिर तीर्थ के पश्चिम में स्थाणीश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। महाभारत के शल्य पर्व में इसे स्कन्द की अनुचरी मातृका भी बताया गया है। कहा जाता है कि महाभारत युद्ध से पहले भगवान श्रीकृष्ण सहित पाण्डवों ने यहां जगदम्बा भगवती की पूजा-उपासना कर महाभारत युद्ध में विजयी होने का वरदान प्राप्त किया था। महाभारत युद्ध में विजय के पश्चात पाण्डवों ने अपने अश्व (घोड़े) मां भगवती की सेवा में अर्पित किये थे। आज भी श्रद्धालु अपनी मनोकामनाओं के पूर्ण होने पर मिट्टी व धातुओं से बने अश्व माँ को अर्पित करते हैं। पुराणों के अनुसार कुरुक्षेत्र के इसी मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण एवं बलराम का मुडंन संस्कार हुआ था। आज भी मुडंन की यह परम्परा अनवरत रुप से चली आ रही है। इस तीर्थ पर शरद एवं वसन्त नवरात्रि के अवसर पर भारी संख्या में श्रद्धालु मां भगवती के दर्शनों हेतु आते हैं। हर मंगलवार एवं शनिवार को भी यहां भक्तो का तांता लगा रहता है।

यहां पर शरद एव बसन्त नवरात्रि को विशाल मेले आयाजित होते हैं। कुरुक्षेत्र की अष्टकोशी प्ररिक्रमा के समय भी इस तीर्थ के दर्शनों की परम्परा है। हरियाणा का एकमात्र शक्तिपीठ होने के कारण यहां प्रदेश भर से भी श्रद्धालु अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने के लिये वर्ष भर अनेक अवसरों पर यहां आते रहते हैं।

स्थाण्वीश्वर-महादेव मंदिर, थानेसर, कुरुक्षेत्र

तीर्थ स्थल

स्थाण्वीश्वर महादेव मंदिर

थानेसर (कुरुक्षेत्र) स्थित यह तीर्थ भगवान शिव को समर्पित है। स्थाणीश्वर महादेव प्राचीन स्थाणेश्वर नगर के अधिष्ठात्र देवता हैं जिनके नाम पर ही पूष्यभूति वंश के संस्थापक पूष्यभूति अथवा पूष्यभूति ने इस नगर को अपने राज्य श्रीकण्ठ जनपद की राजधानी बनाया था। कहा जाता है कि महाभारत युद्ध से पूर्व भगवान श्रीकृष्ण सहित पाण्डवों ने इस स्थान पर स्थाणीश्वर महादेव की पूजा अर्चना कर उनसे महाभारत युद्ध में विजयी होने का वरदान प्राप्त किया था। इस तीर्थ का महात्म्य वामन पुराण में विस्तार से मिलता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ को स्थाणु तीर्थ कहा गया है। पुराण के अनुसार यहां पर स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा स्थाणु शिव के लिंग की स्थापना की गई थी। वामन पुराण के अनुसार स्थाणु तीर्थ पर स्थित स्थाणु वट के उत्तर में शुक्र, पूर्व में सोम, दक्षिण में दक्ष तथा पश्चिम में स्कन्द तीर्थ हैं। इन सभी तीर्थो के मध्य में स्थाणु तीर्थ विद्यमान है। वामन पुराण के अनुसार यहां स्थित लिंग का दर्शन करने पर व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार मध्याह्न के समय समुद्र से लेकर सरोवर तक के सभी तीर्थ प्रतिदिन स्थाणुतीर्थ में आ जाते हैं। बाणभट्ट कृत 'हर्षचरित्र' से भी ज्ञात होता है कि वर्धन वशं के राज्यकाल के समय स्थाणीश्वर नगर के घर-घर में भगवान शिव की पूजा होती थी।

वाराह पुराण के अनुसार कभी यहां मुख्य लिंग के चारो और सहस्रो लिंग स्थापित थे जिन्हें पाशुपतों द्वारा स्थापित किया गया था। स्थाणु तीर्थ को विकसित करने में मराठाओं का भी योगदान रहा है। कहा जाता है कि पानीपत के तीसरे युद्ध से पहले मराठा राज परिवार की स्त्रियों ने थानेश्वर के कई मन्दिरो का जीर्णोद्धार करवाया था जिसमें यह मन्दिर भी प्रमुख है।

श्री गंगा माता प्राचीन मन्दिर श्री गंगा पुत्र भीष्म पितामह बाणशय्या पांडव मन्दि

भीष्म कुंड, नरकातारी, कुरुक्षेत्र

तीर्थ स्थल

भीष्म कुण्ड, नरकातारी

महानदी सरस्वती के बायें तट पर स्थित यह पुराणों में अनरक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। इसी तीर्थ का उल्लेख महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में मिलता है। कहा जाता है कि इस तीर्थ के पूर्व में ब्रह्मा, दक्षिण में शिव पश्चिम में रुद्रपत्नी एवं उतर में भगवान विष्णु का वास हैं। लौकिक आख्यान इस तीर्थ का सम्बन्ध भीष्म पितामह से जोड़ते है। कहा जाता है कि कौरवों की और से दस दिन तक महाभारत युद्ध लड़ने के पश्चात अर्जुन के बाणों से घायल होकर इसी स्थल पर भीष्म पितामह बाणों की शरशय्या पर लेटे रहे तथा सूर्य के उतरी गोलार्ध में आने के पश्चात ही उन्होंने अपने प्राण त्यागे। यहां पर बने कुण्ड को भी भीष्म कुण्ड कहा जाता है।

कुण्ड के निर्माण के सम्बन्ध में कहा जाता है कि रणभूमि में घायल होकर जब भीष्म पितामह बाणों की शरशय्या पर लेटे थे तो अपनी प्यास बुझाने के लिए उन्होंने कौरवों-पाण्डवों को इशारा किया तो कौरव और पाण्डव उनके लिए पात्रों में सुगन्धित पवित्र जल लेकर उपस्थित हुए लेकिन उन्होंने पात्रों में लाये जल को अस्वीकार कर दिया। अर्जुन भीष्म पितामह का संकेत समझ चुके थे इसलिये उन्होंने पार्जन्य अस्त्र भूमि में मारकर जल प्रकट किया। अर्जुन के बाणों से प्रकट हुई जलधारा से ही भीष्म पितामह ने अपनी प्यास बुझाई।

महाभारत युद्ध की समाप्ति पर हस्तिनापुर में राज्य सिंहासन ग्रहण करने के पश्चात भगवान श्रीकृष्ण की सलाह पर युधिष्ठिर ने इसी स्थल पर आकर भीष्म पितामह से राजधर्म एव अनुशासन की शिक्षाएं ग्रहण की। महाभारत के अनुसार महात्मा भीष्म के श्रीमुख से उन उपदेशों को सुनने के लिए पाण्डवों के अतिरिक्त आसित, देवल, ब्यास जैसे महर्षि व अन्य ऋषिगण उपस्थित थे।

बाण गंगा तीर्थ, दयालपुर, कुरुक्षेत्र

तीर्थ स्थल

बाण गंगा तीर्थ, दयालपुर

इस तीर्थ के बारे में अनेक लोक आख्यान मिलते है। इनमें से एक के अनुसार महाभारत युद्ध के दौरान कौरवों द्वारा जयद्रथ को बचाने हेतु बनाए गये व्यूह का भेदन करने से पूर्व अर्जुन ने इसी स्थान पर पर्जन्यास्त्र का भेदन कर बाण गंगा प्रकट की थी। बाण गगां से निकले हुए जल से उन्होंने अपने घोडों को पानी पिलाया।

दूसरी लोक कथा के अनुसार इसी स्थान पर महादानी कर्ण ने ब्राह्मण वेशधारी श्रीकृष्ण को मरने से पूर्व अपना स्वर्ण मंडित दांत उपहार स्वरुप भेंट किया था। श्रीकृष्ण के आग्रह पर उन्होंने अपने दांत को भेंट करने से पहले उसे पर्जन्यास्त्र से प्रकट की गई बांण गंगा के जल से धो डाला था।

तीर्थ में वर्तमान में एक उतर मध्यकालीन बावड़ीनुमा सरोवर है जिसका जीर्णोद्धार कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा करवाया गया है। इसी तीर्थ सरोवर में इंटों से बनी धनुषाकृति है। मन्दिर के परिसर में लाखोरी इंटों से निर्मित एक समाधि है। तीर्थ परिसर में ही माता बाला सुन्दरी का एक आधुनिक मन्दिर भी स्थित है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र की अष्टकोशी परिक्रमा मार्ग पर पड़ने वाले तीर्थो में से एक प्रमुख तीर्थ है। कुरुक्षेत्र की अष्टकोशी परिक्रमा नाभिकमल तीर्थ से प्रारम्भ होकर कार्तिक मन्दिर, स्थाण्वीश्वर महादेव मंदिर, भद्रकाली मंदिर, कुबेर तीर्थ, मारकण्डा खेड़ी, रन्तुक यक्ष पिपली, शिवमन्दिर पलवल से होकर यहां बाण गंगा तीर्थ पर पहुंचती है। यहां से भीष्म कुण्ड नरकातारी से होकर अंत में नाभिकमल मंदिर में सम्पन्न होती है।

श्रीकृष्ण संग्रहालय

श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र

पर्यटन स्थल

श्रीकृष्ण संग्रहालय

सौंदर्य, बुद्धि और आध्यात्मिक प्रतिष्ठा के स्वरूप श्रीकृष्ण की युगों से पूजा होती आ रही है। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व के कारण उन्हें सर्वोच्च महत्व का देवता माना जाता है। श्रीकृष्ण के रहस्य को उजागर करना वास्तव में एक अद्भुत अनुभव है, क्योंकि प्रत्येक बार जब आप श्रीकष्ण के रहस्य को उजागर करते हैं तो आपको इसमें एक नया आयाम मिलता है। साहित्य में उल्लिखित किए गए श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व के देवत्व और उसके मानवीय पहलू मानव सभ्यता के इतिहास में अद्वितीय हैं। वह भारतीय मिथकों और किंवदंतियों के सबसे लोकप्रिय चरित्र हैं। श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व और शिक्षाएं राष्ट्रीय लोकाचारों में प्रचलित हैं। उनकी बाल्यकाल की अलौकिक क्रीड़ाएं एवं पराक्रम के कथानक, लोक और शास्त्रीय शैली के कला मनीषियों के लिए युगों-युगों से कलात्मक अभिव्यक्तियों की प्रेरणा स्रोत रही हैं।

श्रीकृष्ण के विचारों और आदर्शों से जनमानस के आध्यात्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान को मध्यनजर रखते हुए ही कुरुक्षेत्र में वर्ष 1987 में श्रीकृष्ण संग्रहालय की स्थापना की गई। इसके पश्चात सन् 1991 में संग्रहालय को वर्तमान भवन में स्थानांतरित कर दिया गया जिसमें सन् 1995 में एक दूसरा संग्रहालय भवन जोड़ा गया। वर्ष 2012 में मल्टीमीडिया महाभारत एवं गीता गैलरी को संग्रहालय भवन के तृतीय खण्ड का निर्माण किया गया। संग्रहालय का विषय श्रीकृष्ण, कुरुक्षेत्र और महाभारत है। इस कथानक पर यह विश्व का एकमात्र संग्रहालय है।

रणभूमि में गिरते हुए भीष्म
मल्टीमीडिया महाभारत गैलरी, श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र

पर्यटन स्थल

श्रीकृष्ण संग्रहालय की वीथिकाएं

श्रीकृष्ण संग्रहालय के तीन भवनखण्डों में कुल नौ वीथिकाएं हैं जो भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण को भगवान के रूप में प्रस्तुत करने वाली कलाकृतियों को प्रदर्शित करती हैं। कुरुक्षेत्र में कला, वास्तुकला और संस्कृति की एक समृद्ध धरोहर विद्यमान है। इस क्षेत्र से प्राप्त प्रस्तर मूर्तियों, मृणमूर्तियों, धातु मूर्तियों और वास्तु शिल्प के अंशों को संग्रहालय की प्रदर्शनी में दिखाया गया है। संग्रहालय में हड़प्पा, धूसर चित्रित मृदभाण्ड (महाभारत कालीन) और ऐतिहासिक काल के अवशेष प्रदर्शित हैं। बणावली, कुणाल, भिरड़ाना, बालू, राखीगढ़ी जैसे परिपक्व हड़प्पा स्थलों की खुदाई से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों को भी यहां प्रदर्शित किया गया है। यहां प्रथम शती ई. से लेकर 12वीं शती ई. तक हरियाणा और श्रीकृष्ण कथा से संबंधित अन्य स्थलों से प्राप्त कृष्ण-विष्णु विषय पर आधारित प्रस्तर मूर्तियों का भी संग्रह किया गया है। महाभारत काल में यादवों की राजधानी रही द्वारका के पौराणिक नगर से प्राप्त पुरावशेष पुरातात्विक वीथिका के प्रमुख आकर्षण हैं।

महाभारत भारतीय प्रज्ञा एवं ज्ञान का एक अमूल्य कोष है। एक महाकाव्य होने के कारण महाभारत में नैतिकता, सिद्धांत, दर्शनशास्त्र, इतिहास, भूगोल, धर्मशास्त्र आदि विषयों का विशाल संग्रह है। इसमें बहुत सी किंवदंतियां, नैतिक एवं स्थानीय कथाएं भी शामिल हैं। महाभारत के इस विशाल कथा कोष को एक अलग वीथिका में प्रमुखता से प्रदर्शित करने के उद्देश्य से ही संग्रहालय में मल्टीमीडिया महाभारत एवं गीता गैलरी का निर्माण किया गया। इस वीथिका में महाभारत कथा काक रैखिक रुप में प्रस्तुत किया गया है जहां राजा जन्मेजय के नाग यज्ञ से लेकर अंत में पांडवों के स्वर्गारोहण की कथा आकर्षक माध्यमों द्वारा प्रस्तुत की गई है।

कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र
KURUKSHETRA PANORAMA & SCIENCE CENTRE

कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केंद्र, कुरुक्षेत्र

पर्यटन स्थल

कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केंद्र

यह केंद्र श्रीकृष्ण संग्रहालय के निकट स्थित है। महाभारत का महान युद्ध इस पैनोरमा परियोजना का मुख्य कथानक है। इसका प्रबन्धन राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् द्वारा किया जाता है। एक विशाल और भव्य भवन में स्थित यह केंद्र विशेष ध्वनि एवं प्रकाश के प्रभाव से महाभारत के महायुद्ध को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के महायुद्ध का जीवंत चित्रण केंद्र का मुख्य आकर्षण बिंदु है। बेलनाकार हाल के केंद्र में खड़े होकर पर्यटक पांडवों और कौरवों के बीच अठारह दिन तक चले युद्ध की विशाल 34 फुट ऊँची चित्रकला को देख सकते हैं। केन्द्र के भू-तल पर खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान तथा गणित के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों की विशिष्ट उपलब्धियों को प्रदर्शों के माध्यम से दिखाया गया है।

धरोहर
हरियाणा संग्रहालय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र
TICKET COUNTER

धरोहर हरियाणा संग्रहालय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

पर्यटन स्थल

धरोहर हरियाणा संग्रहालय

हरियाणा की स्थानीय संस्कृति और समृद्ध परंपरा के प्रति लोगों को जागरूक बनाने के लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में धरोहर हरियाणा संग्रहालय की स्थापना की गयी। धरोहर संग्रहालय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के भगवद्गीता सदन के परिसर में स्थित है जिसका लोकार्पण 28 अप्रैल, 2006 को हुआ।

संग्रहालय में कृषि और घरेलू उपकरण और हरियाणा राज्य की कला व शिल्प वस्तुओं जैसी विभिन्न प्रकार की वस्तुएं प्रदर्शित हैं। इसके अतिरिक्त इसमें पुरातात्विक कलाकृतियों, पांडुलिपियों, भित्ति चित्रों, लोक संगीत वाद्ययंत्रों, आभूषणों, हथियारों आदि का संग्रह भी मौजूद है। संग्रहालय का एक भाग हरियाणा के युद्ध-नायकों को समर्पित है। धरोहर का दूसरा चरण हरियाणा की लोक-सांस्कृतिक परंपराओं में निर्मित विभिन्न शिल्प वस्तुओं को जीवन्त रुप में प्रदर्शित करता है।

कल्पना चावला तारामंडल
KALPANA CHAWLA PLANETARIUM

कल्पना चावला स्मारक तारामण्डल, कुरुक्षेत्र

पर्यटन स्थल

कल्पना चावला स्मारक तारामण्डल

कल्पना चावला स्मारक तारामण्डल का नाम हरियाणा की बहादुर बेटी और अंतरिक्ष यात्री एवं अंतरिक्ष वैज्ञानिक, डॉ. कल्पना चावला के नाम पर रखा गया है। खगोल विज्ञान में गैर-औपचारिक शिक्षा प्रदान करने के लिए हरियाणा राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा इस तारामण्डल को स्थापित किया गया है।

हाई-टैक डिजिटल और आप्टो-मैकेनिकल सिस्टम के साथ उत्कृष्ट कार्यक्रम, अंदर और बाहर प्रस्तुत सहयोगी प्रदर्शन बड़े पैमाने पर लोगों और विशेष रूप से विद्यार्थियों को विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने और ब्रह्मांड के बारे में पूरी जानकारी हासिल करके अपने जिज्ञासुओं के मन को संतुष्ट करने में सहायता प्रदान करते हैं।

तारामण्डल का मुख्य आकर्षण खगोल विज्ञान प्रदर्शनियां, प्रदर्शनी गैलरी और एस्ट्रो पार्क हैं। पर्यटकों की मांग पर खगोल विज्ञान कार्यक्रम को आम तौर पर हिंदी भाषा में और विशेष कार्यक्रमों को हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रस्तुत किया जाता है।

कर्म

भक्ति

और

ज्ञान

का दर्शन

अष्टादश श्लोकी

भगवद्गीता

दिव्य गीत

अन्तर्राष्ट्रीय

गीता महोत्सव

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

सभी उपनिषदों को गाय बनाकर और अर्जुन को बछड़ा बनाकर दोग्धा श्रीकृष्ण ने महान अमृतरुपी गीता के जिस ज्ञान का दोहन किया है उसके भोक्ता ज्ञानीजन हैं।

गुरु श्रीकृष्ण

कृष्ण शब्द का अर्थ है वह सभी कुछ जो हमें आकर्षित करता है। इस तरह से कृष्ण में पूरी सुन्दरता, नित्यता, और अनन्तता समा जाती है। महाभारत में उन्हें एक ऐतिहासिक पुरुष और एक अवतार के रूप में दिखाया गया है। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बौद्ध ग्रंथ निदेश में वासुदेव और बलदेव के भक्तों के बारे में भी बताया गया है। मेगस्थनीज (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) ने भी मेथोरा (मथुरा) और क्लीसोबोरा (कृष्णपुरा) नगरी में शूरसेन प्रदेश के लोगों द्वारा हेराक्लीस (कृष्ण) की भक्ति के बारे में बताया है। तक्षशिला निवासी यूनानी राजदूत व भागवत धर्मावलम्बी हेलियोडोरस ने दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बेसनगर शिलालेख में वासुदेव को देव-देव (देवों के देव) कहा है।

श्रीकृष्ण ने जिन सिद्धांतों को प्रतिपादित व प्रसारित किया वह भागवत संप्रदाय की मूल शिक्षाएं हैं। गीता के चौथे अध्याय में कृष्ण कहते हैं कि वह कोई नई शिक्षा नहीं दे रहे हैं, बल्कि उसी शिक्षा को दोहरा रहे हैं जो उन्होंने सृष्टि के आरम्भ में सूर्य अर्थात विवस्वान को प्रदान की थी, विवस्वान से यह ज्ञान मनु को और मनु से इक्ष्वाकु तक पहुंचा।

कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में जब अर्जुन पूरी तरह से घबरा जाते हैं, जब उन्हें सही कर्म सिद्धांत का ज्ञान नहीं होता, जब वह मोहग्रस्त होकर सत्य एवं असत्य में भेद करना भूल जाते हैं तथा सांसारिक नश्वरता को सत्य मानकर दिग्भ्रमित होते हैं, तब वह अपने सारथि एवं मित्र जगद्गुरु श्रीकृष्ण की शरण लेते हैं और उनसे ज्ञान प्राप्ति के लिए अनुरोध करते हैं।

अर्जुन की भांति प्रत्येक व्यक्ति एक शिष्य, पूर्णता का आकांक्षी और ईश्वर का साधक है और अगर वह ईमानदारी और विश्वास के साथ ईश्वर का ध्यान करे तो ईश्वर उसका लक्ष्य बन जाते हैं, फिर ईश्वर ही उसका मार्गदर्शन भी करते हैं।

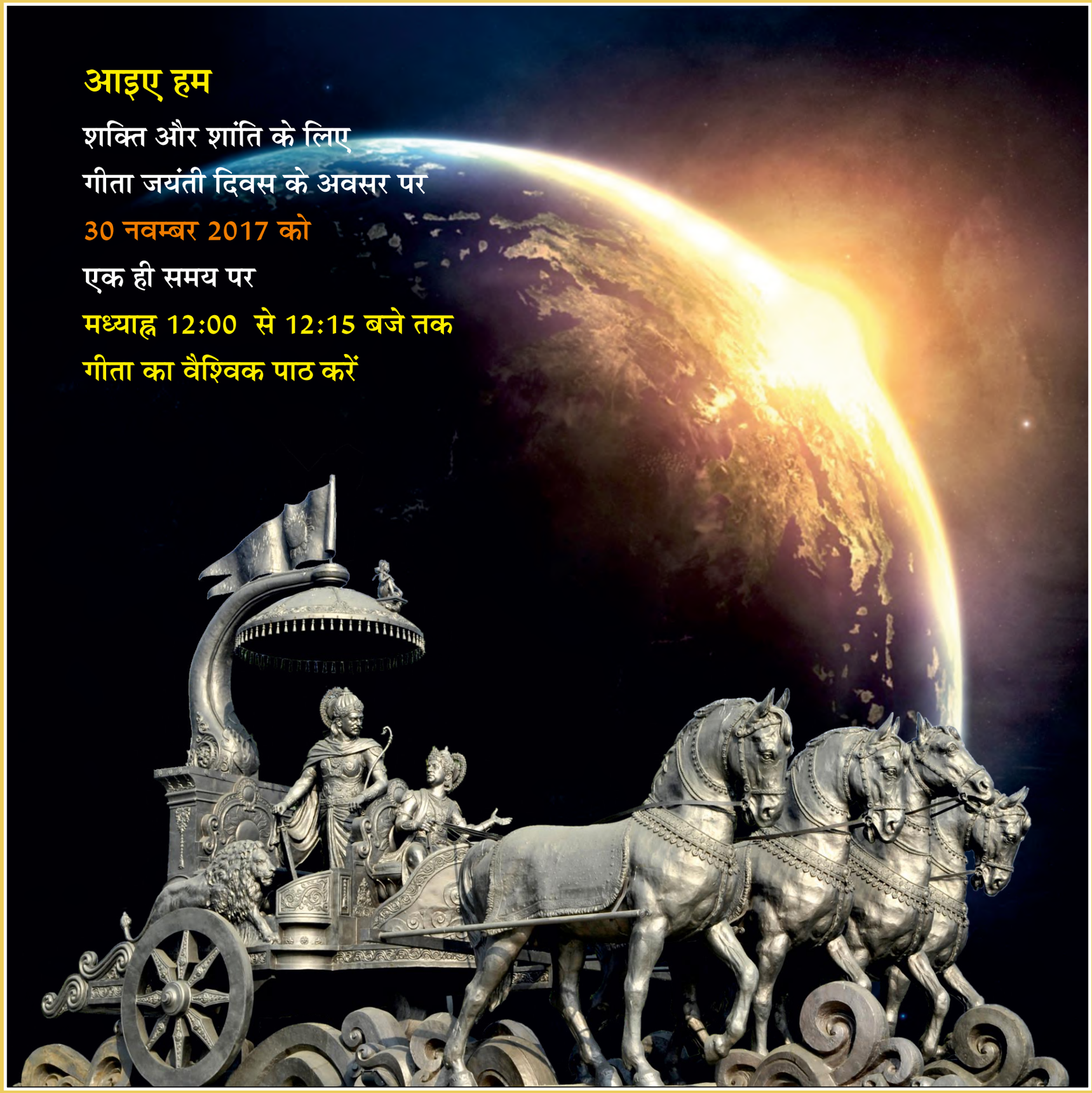

आइए हम
शक्ति और शांति के लिए
गीता जयंती दिवस के अवसर पर
30 नवम्बर 2017 को
एक ही समय पर
मध्याह्न 12:00 से 12:15 बजे तक
गीता का वैश्विक पाठ करें

आइए हम

विश्व शांति के लिए गीता का पाठ करें।
सार्वभौमिक दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए गीता का पाठ करें।
समस्त विश्व को एक परिवार के रूप में देखने के लिए गीता का पाठ करें।
आंतरिक सद्भाव के लिए गीता का पाठ करें।
आपके परिवार और मित्रों की भलाई के लिए गीता का पाठ करें।
अपने मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए गीता का पाठ करें।
अपनी सम्पूर्ण प्रसन्नता के लिए गीता का पाठ करें।
अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने के लिए गीता का पाठ करें।
निर्भय रहने के लिए गीता का पाठ करें।
जीवन मूल्यों की प्रतिस्थापना के लिए गीता का पाठ करें।
आध्यात्मिक संस्कृति के पुनः प्रवर्तन के लिए गीता का पाठ करें।

श्रीमद्भगवद्गीता का वैश्विक पाठ

श्रीमद्भगवद्गीता का शाश्वत संदेश कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में हजारों वर्ष पूर्व भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अपने कर्तव्यों से विमुख हो रहे मोहग्रस्त अर्जुन का अज्ञान दूर करने के लिए दिया गया था। गीता का यह अमर सन्देश जाति, रंग, पंथ एवं विश्वास की सीमाओं से परे है। यह मानव कल्याण हेतु किसी भी समय व्यवहार में लाया जा सकता है। वास्तव में, गीता वर्तमान विश्व में विद्यमान सभी बुराइयों और मानसिक कष्टों के उन्मूलन हेतु सबसे अच्छा उपाय है।

गीता के अजर-अमर संदेश से विश्व समुदाय को परिचित कराने के लिए, गीता जयंती के दिन (शुक्ल एकादशी मार्गशीर्ष मास) श्रीमद्भगवद्गीता का वैश्विक पाठ कुरुक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर एवं ज्योतिसर में दोपहर 12 बजे से 12.15 बजे तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर गीता के अठारह अध्यायों में से चयनित अठारह श्लोकों का पाठ किया जायेगा। गीता के यह श्लोक यूट्यूब के माध्यम से भी विश्वभर में प्रतिभागियों के लिए उपलब्ध रहेंगे।

गीता के वैश्विक पाठ का उद्देश्य विश्व शांति बनाये रखने के उद्देश्य से है, जो कि समय की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, गीता के सन्देश के माध्यम से व्यष्टि व समष्टि का सम्पूर्ण आध्यात्मिक विकास इस कार्यक्रम का एकमात्र उद्देश्य है। अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के आयोजक दिनांक 30 नवम्बर, 2017 को अपराह्न 12 बजे से 12:15 बजे (आईएसटी) तक विश्व के समस्त आध्यात्मिक समुदाय से इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भागीदारी के लिए अनुरोध करते हैं।

दुर्योधन
धृतराष्ट्र
संजय
धृतराष्ट्र

अर्जुनविषादयोग
ARJUNA VISHADA YOGA
अर्जुन के मोह का योग

गीता का पहला अध्याय भगवद्गीता के रहस्योद्घाटन के कारणों का निर्धारण करने वाले दृश्य, व्यवस्था, परिस्थितियों और वर्णों का परिचय देता है। यह दृश्य कुरुक्षेत्र के पवित्र मैदान का है। इसकी व्यवस्था एक युद्धक्षेत्र की है और परिस्थिति युद्ध की है। इसमें मुख्य पात्र भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं। सेनाध्यक्षों की अगुआई में लाखों सैनिक शामिल हैं। दोनों पक्षों के प्रमुख योद्धाओं के अवलोकन के पश्चात् अर्जुन अपने मित्रों एवं स्वजन सम्बन्धियों के युद्ध मे मारे जाने की कल्पना कर मोहग्रस्त हो जाता है तथा धनुष वाण त्याग कर रथ के पिछले भाग में बैठ जाता है। इसीलिए इस अध्याय को अर्जुन के मोह का योग भी कहा जाता है।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।।

गीता 1/1

dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ
māmakāḥ pāṇḍavāś caiva kim akurvata sañjaya

श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम श्लोक! चेतावनी और प्रेरणा साथ-साथ। भेद बुद्धि, पक्षपात पूर्ण संकीर्ण सोच ही वैमनस्य -विद्वेष, कलह-क्लेश का मूल कारण हैं! समबुद्धि-उदार सोच कर्म को ही धर्म बना सकती है! धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे का लाक्षणिक अभिप्राय यही है ।

In the field of righteousness, the field of the Kurus, when my people and the sons of Pandu had gathered together, eager for battle, what did they do, O Sanjaya?

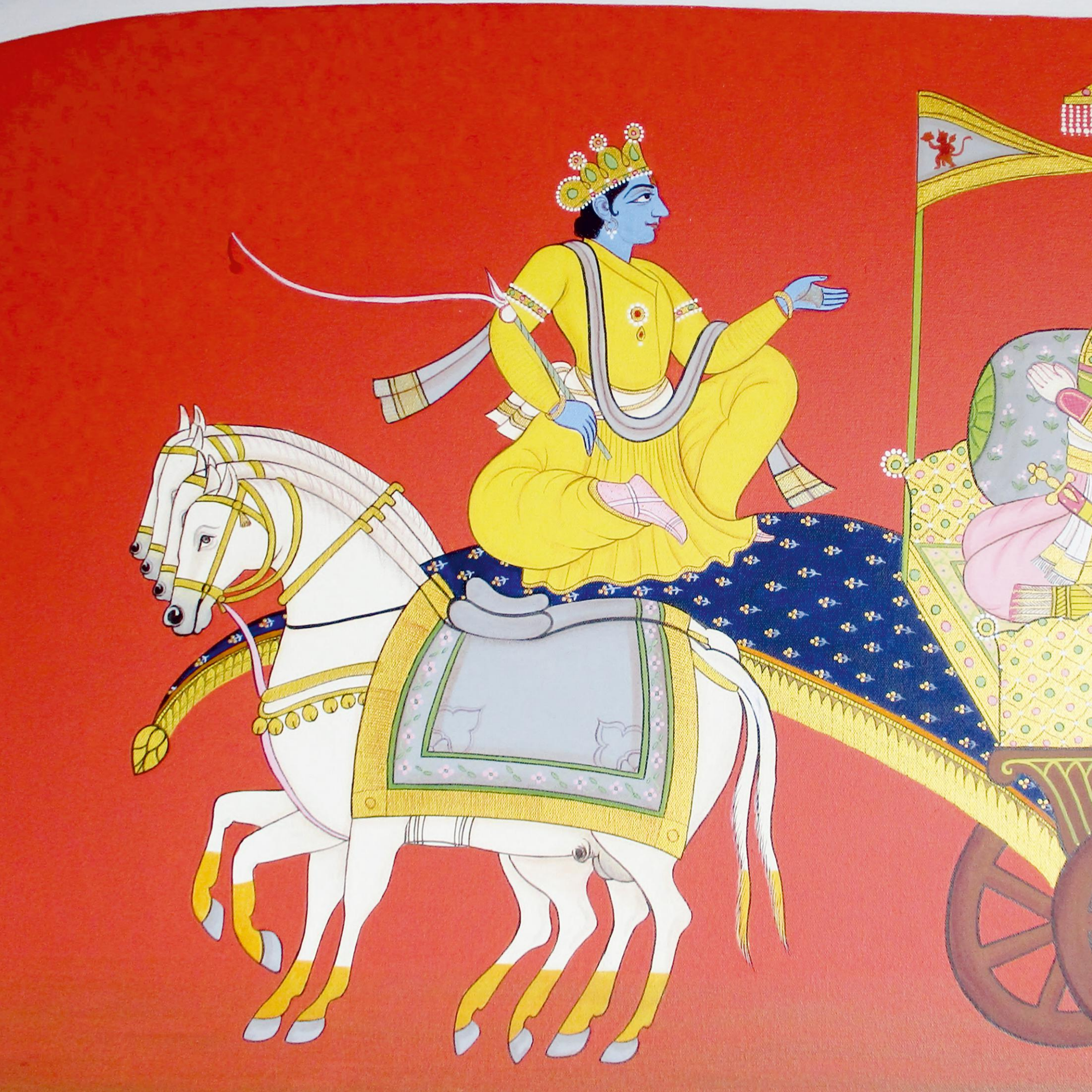

सांख्ययोग
SANKHYA YOGA
ज्ञान योग

इस अध्याय में अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण के शिष्य के रूप में स्थिति को स्वीकार करते हैं। वह भगवान से प्रार्थना करते हैं कि विलाप और दुख को कैसे दूर किया जाए। इस अध्याय को बहुधा संपूर्ण भगवद्गीता का सारांश माना जाता है जहां कर्म योग, सांख्य योग, बुद्धि योग और आत्मा जैसे बहुत से विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में सभी जीवित प्राणियों में विद्यमान आत्मा के अमरत्व को परिभाषित कर विस्तार से वर्णित किया गया है। इस प्रकार यह अध्याय आत्मा के अमरत्व की वास्तविकता पर केंद्रित है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

गीता 2/47

karmaṇy evā dhikāras te mā phaleṣu kadācana
mā karmaphalahetur bhūr mā te saṅgo 'stv akarmaṇi

अपने कर्त्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पित निष्ठा; प्रमाद, कोताही, लापरवाही नहीं! मुझे क्या मिलेगा – यह सोच कृपण, संकीर्ण बनाती है, क्षमताओं को कमजोर करती है! मैं क्या दे सकता हूँ– यह भाव बनाकर कर्त्तव्य पथ पर आगे बढें, अनुभव करें मानसिक सन्तुष्टि क्षमताओं का विकास, सामाजिक सम्मान एवं ईश्वरीय कृपा।

To action alone hast thou a right and never at all to its fruits; let not the fruits of action be thy motive; neither let there be in thee any attachment to inaction.

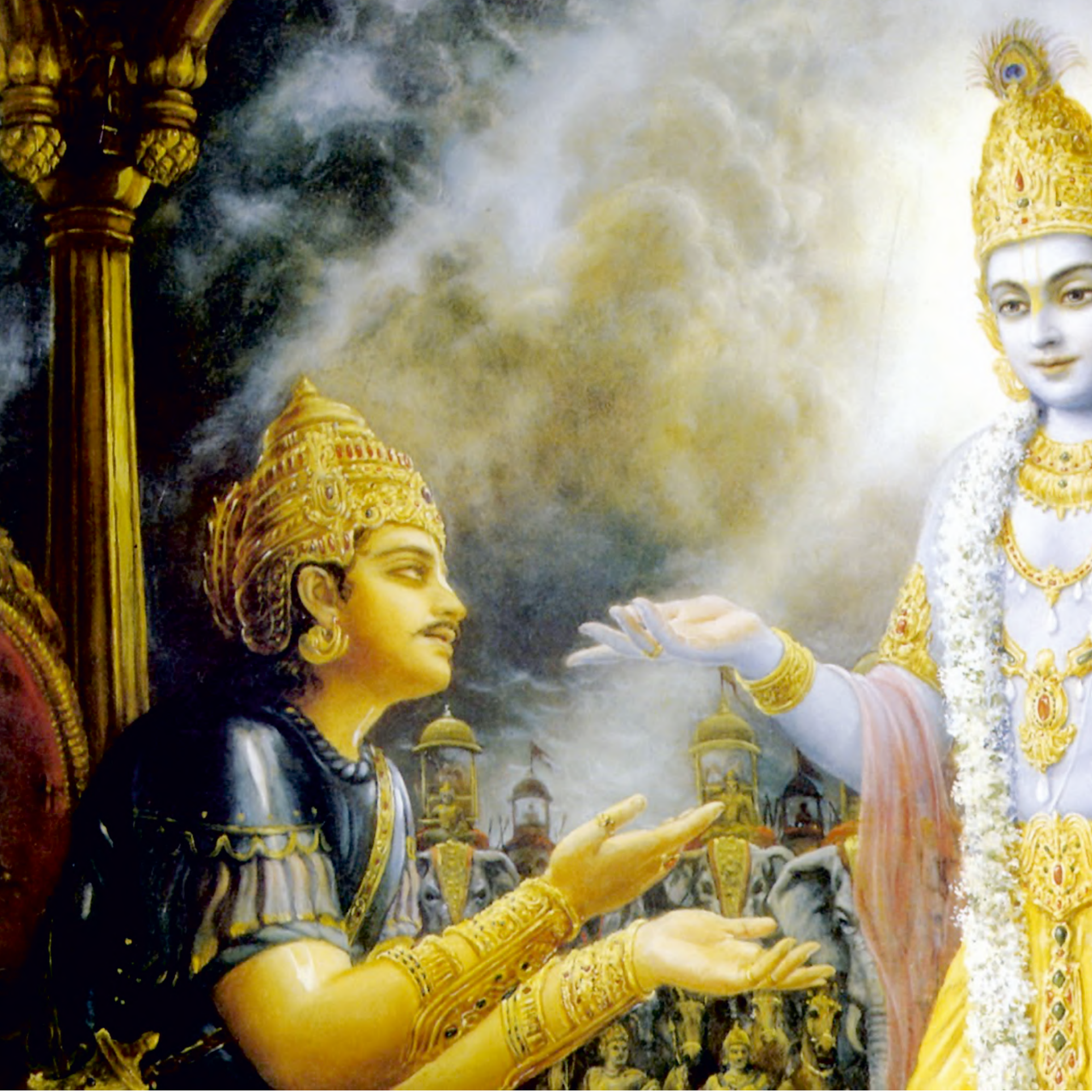

कर्मयोग
KARMA YOGA
कर्म योग

यह अध्याय सभी के लिए अनिवार्य निर्धारित कर्तव्य करने को महत्व देता है। यहां भगवान श्रीकृष्ण स्पष्ट और व्यापक रूप से बताते हैं कि समाज के नियमों और विनियमों के अनुसार जीवन के अपने स्तर पर अपने कार्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करना हमारे समाज के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य है। इसके अतिरिक्त भगवान बताते हैं कि इस तरह के कर्तव्यों का पालन क्यों किया जाना चाहिए, इन्हें करने से क्या लाभ प्राप्त होते हैं और इन्हें न करने से क्या हानि होती है। इसके साथ-साथ भगवान बताते हैं कि कौन से कार्य हमें बंधन में पड़ने के कारण बनते हैं और कौन से मुक्ति के। इस अध्याय मे इन्हें विस्तार से वर्णित किया गया है।

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।।

गीता 3/20

karmaṇai' va hi saṁsiddhim āsthitā janakādayaḥ
lokasaṅgraham evā pi sampaśyan kartum arhasi

कर्त्तव्य पथ पर बढ़ते हुए अच्छा आदर्श आवश्यक है। लोक संग्रह के भाव से कर्म हों, आसक्ति निज हित अथवा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए नहीं। परहित, जनहित, लोकहित की व्यापक सोच बनाएं! राजा जनक का उदाहरण इसी भाव से है। ऊँच-नीच की दूरियाँ मिटाने, सामाजिक समता, समरसता, सद्भावना लाने एवं राष्ट्रीय गौरव बढ़ाने हेतु यह श्लोक विशेषतः 'लोक संग्रह' शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

It was even by works that Janaka and others attained perfection. Thou shouldst do works also with a view to the maintenance of the world.

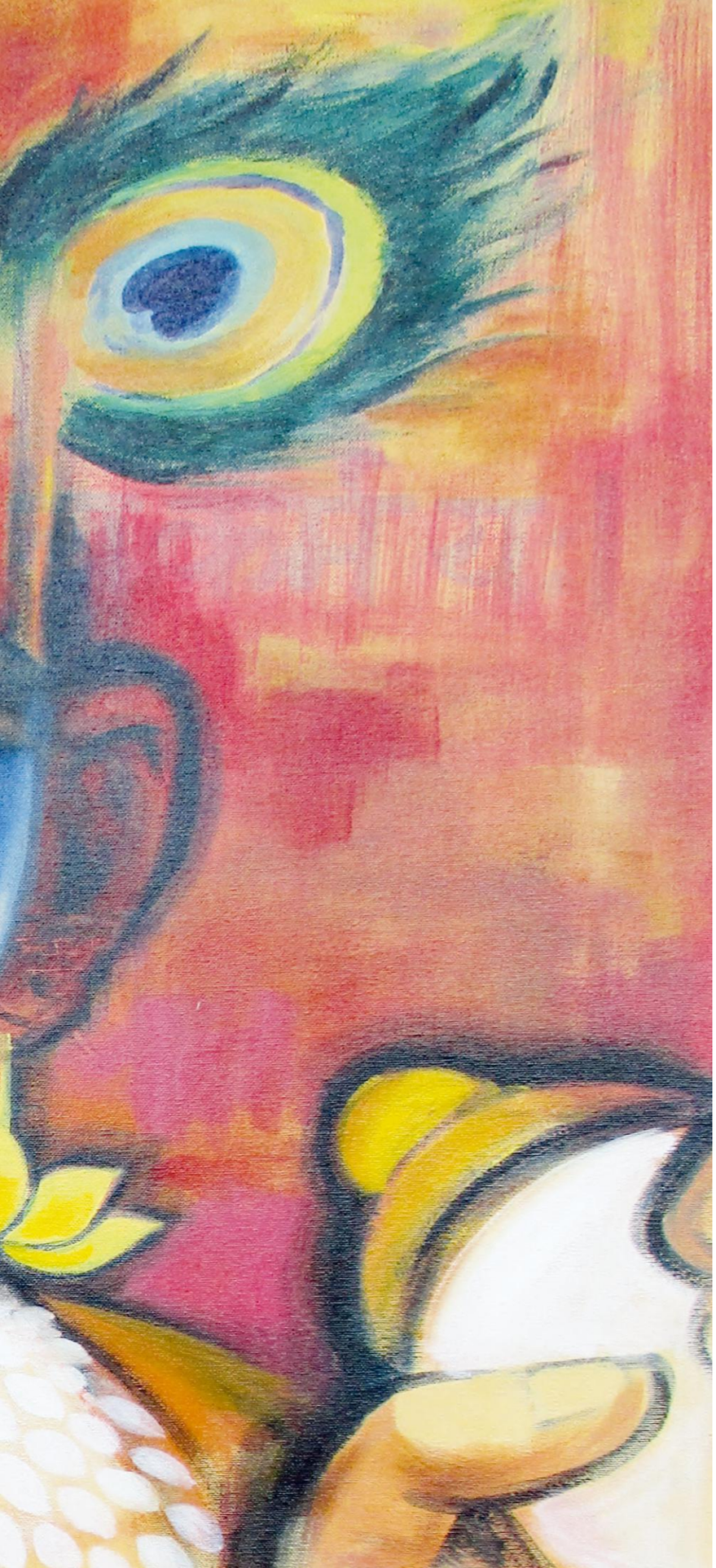

ज्ञानकर्मसंन्यासयोग
JNANA KARMA SANYASA YOGA
कर्म और ज्ञान के संन्यास का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि शिष्य को अनुक्रमण का आध्यात्मिक ज्ञान कैसे प्राप्त होता है। भगवान यह भी बताते हैं कि वह इस भौतिक संसार में क्यों और कैसे आए हैं। यहां वह कर्म और ज्ञान मार्ग और सर्वोच्च ज्ञान से संबंधित बुद्धिमत्ता के मार्ग के बारे में बताते हैं जिसके परिणामस्वरूप दोनों मार्गों के चरम तक पहुंचा जा सकता है।

यहां भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि 'इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि:सन्देह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्धान्त: करण हुआ मनुष्य अपने आप ही आत्मा में पा लेता है।

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।।

गीता 4/15

evaṁ jñātvā kṛtaṁ karma pūrvair api mumukṣubhiḥ
kuru karmai 'va tasmāt tvaṁ pūrvaiḥ pūrvataraṁ kṛtam

अपने-अपने क्षेत्र का समृद्ध अतीत देखें। जिन्होंने अच्छे संकल्प, अच्छी कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ अच्छे आदर्श प्रस्तुत किये; अपने कार्य क्षेत्र के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र का सम्मान बढ़ाया, आदर्श, प्रेरणा के रूप में अपना नाम बनाया -यह गीता मंत्र अनूठी प्रेरणा है- अपने कर्म एवं जीवन यात्रा को उसी पथ पर आगे बढ़ाने के लिये।

So knowing was work done also by the men of old who sought liberation. Therefore do thou also work as the ancients did in former times.

अरजण

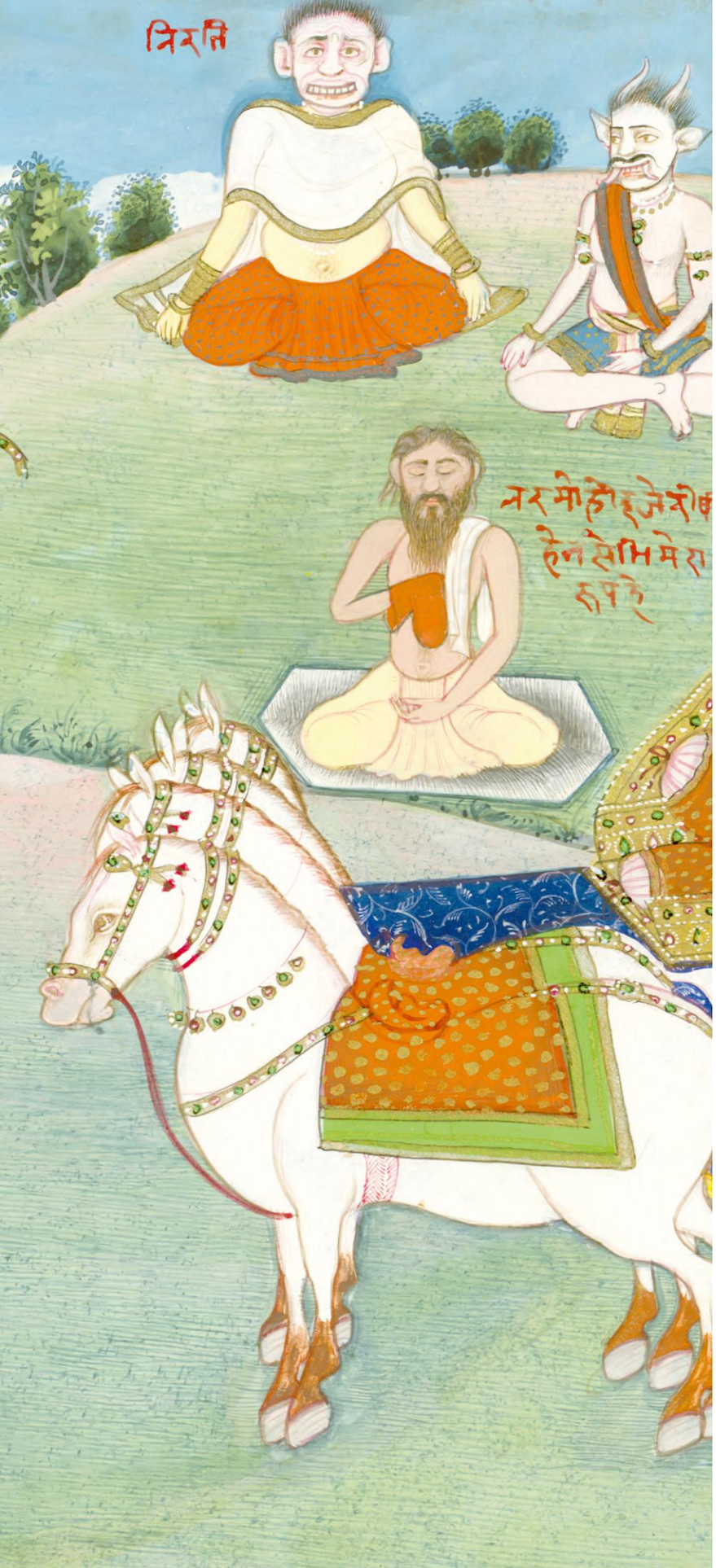

कर्मसंन्यासयोग
KARMA SANYASA YOGA
कर्म से संन्यास का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण निष्काम भाव के साथ कर्म करने और कर्मो के त्याग के बारे में समझाते हैं और बताते हैं कि दोनों एक ही लक्ष्य तक पहुंचने के साधन हैं। यहां वह बताते हैं कि इन मार्गो के अनुसरण से मुक्ति कैसे प्राप्त होती है।

इस अध्याय में यह स्पष्ट किया गया है कि 'कर्मो का त्याग या बिना स्वार्थ कर्म करना, दोनों से ही मुक्ति प्राप्त होती है। परन्तु कर्मो को बिना स्वार्थ के करना उनके त्याग से श्रेष्ठ है।'

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संङ्गं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।।

गीता 5/10

brahmaṇy ādhāya karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā karoti yaḥ
lipyate na sa pāpena padmapatram ivā 'mbhasā

कर्म करते हुए अहंकार बुद्धि नहीं! ईश्वरीय कृपा का आधार, ईश्वरीय कृपा से मुझे इस पद या दायित्व के रूप से समाज, राष्ट्र एवं मानवता की सेवा का सौभाग्य मिला है– ऐसा भाव। किसी व्यक्तिगत अथवा बाह्य वातावरण की बुराई का प्रभाव अपने ऊपर नही, अपनी अच्छाई की सुबास वातावरण में; ठीक वैसे ही जैसे पानी या कीचड़ में रहते हुए कमल।

He who works, having given up attachment, resigning his actions to God, is not touched by sin, even as a lotus leaf (is untouched) by water.

आत्मसंयमयोग
AATM SAMYAM YOGA
स्वयं पर नियंत्रण का योग

स्वयं पर नियंत्रण के योग के रूप में जाने वाले इस अध्याय को ध्यान योग के रूप में भी जाना जाता है। यहां भगवान श्रीकृष्ण मन की कठिनाइयों और उन प्रक्रियाओं के बारे में समझाते हैं जिनके द्वारा योग के माध्यम से मनुष्य अपने मन के स्वामित्व के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकता है और इससे जीवंत प्राणियों के आध्यात्मिक स्वभाव के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है।

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'जिसने अपने आप पर विजय हासिल कर ली है और मानसिक शांति प्राप्त कर ली है वह शीत और गर्मी, सुख और दु:ख और मान या अपमान' जैसी विपरीत स्थितियों में भी हमेशा शांत रहता है और यही इस अध्याय का सार है।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दु:खं स योगी परमो मतः।।

गीता 6/32

ātmaupamyena sarvatra samaṁ paśyati yo 'rjuna
sukhaṁ vā yadi vā duḥkhaṁ sa yogī paramo mataḥ

मुस्कुराती मानवता का महानतम् आदर्श है यह गीता मंत्र। ईश्वरीय चेतना सब में सम है, इस दृष्टि से सबके साथ अपनापन। किसी को सुखी देखकर प्रसन्नता ! दुखी देखकर स्वयं को पीड़ा ! परम योगी की गीता-दिव्यता ! साकार होने पर क्यों होगा भ्रष्टाचार -अत्याचार ?

He, O Arjuna, who sees with equality everything, in the image of his own self, whether in pleasure or in pain, he is considered a perfect yogi.

ज्ञानविज्ञानयोग
JNANA VIJNANA YOGA
ज्ञान और बुद्धि का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण निरपेक्ष वास्तविकता के साथ-साथ दिव्यता की प्रचुरता का भी ठोस ज्ञान देते हैं। वे माया नामक भौतिक अस्तित्व में अपनी भ्रामक ऊर्जा का वर्णन करते हैं और यह बताते हैं कि इससे बचना कितना कठिन है। वह दिव्यता के प्रति आकर्षित चार प्रकार के लोगों और दिव्यता के विरुद्ध चार प्रकार के लोगों के बारे में भी बताते हैं। अंत में उन्होंने बताया है कि आध्यात्मिक बुद्धि वाला व्यक्ति भगवान की भक्ति सेवा में बिना किसी संदेह के भगवान की शरण में जाता है।

भगवान यहां यह भी बताते हैं कि जल का स्वाद, चंद्रमा और सूर्य का प्रकाश, वेदों में औ३म शब्द, आकाश में ध्वनि और पुरुषों में पुरुषत्व उन्हीं के ही कारण है।

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।।

गीता 7/7

mattaḥ parataraṁ nānyat kiñcid asti dhanañjaya
mayi sarvam idaṁ protaṁ sūtre maṇigaṇā iva

जाति, वर्ग, वर्ण, रूप, रंग अनेक हैं; अपनी अपनी प्रारब्ध अनुसार कोई निर्धन-धनवान , पदाधिकारी -कर्मचारी हो सकते हैं; लेकिन ईश्वरीय चेतना सब में एक है, ठीक वैसे ही, जैसे माला में मणियाँ (मनके) अनेक, लेकिन सूत्र एक। मानसिक शांति पारिवारिक सद्भावना, समाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बन्धुत्व की दिव्यता छिपी हुई है इस गीता भाव में ।

There is nothing whatever that is higher than Me, O Winner of wealth (Arjuna). All that is here is strung on me as rows of gems on a string.

पंडवादीसन

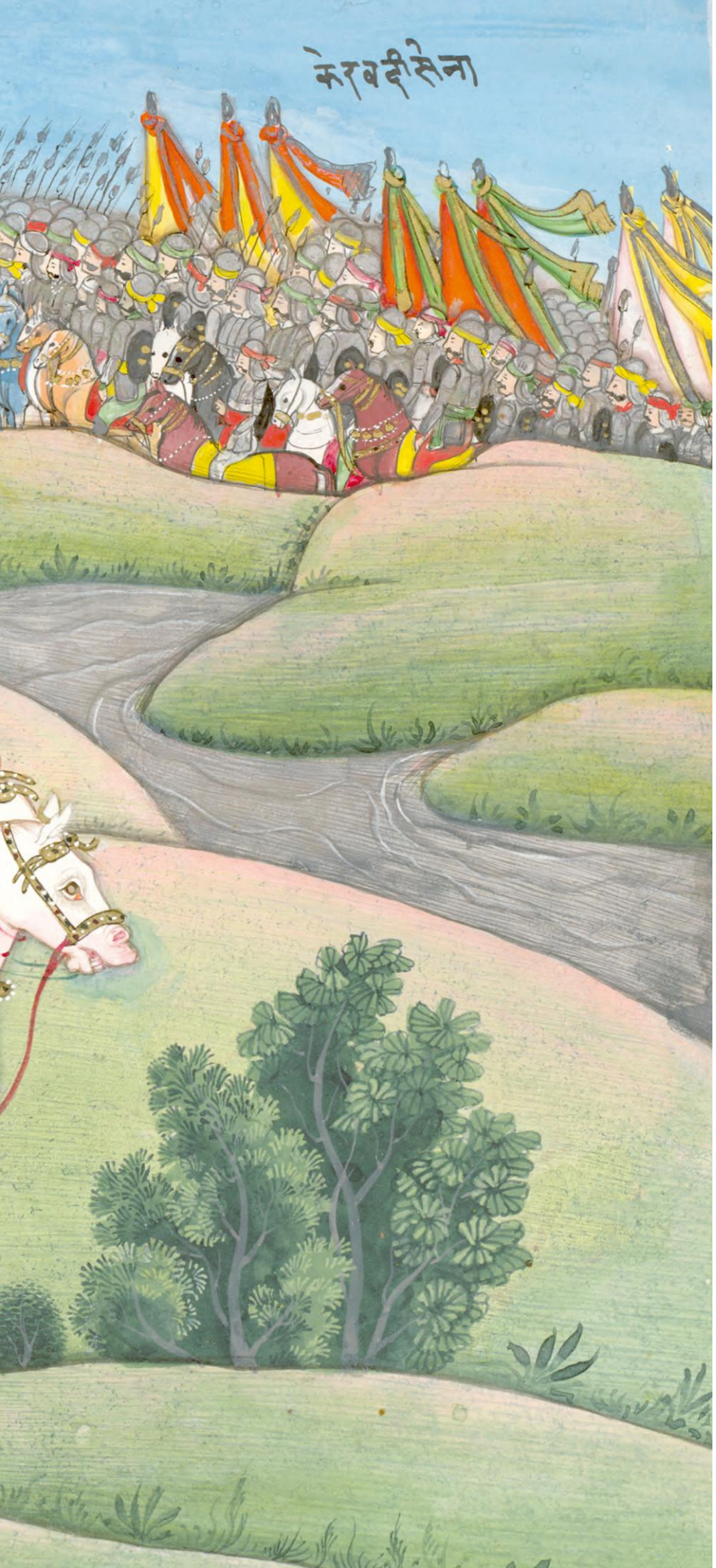

अक्षरब्रह्मयोग
AKSHARA BRAHMA YOGA

अनश्वर पूर्णता का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण योग के विज्ञान पर जोर देते हैं। वह कहते हैं कि व्यक्ति जो भी अपने जीवन के अंत में याद रखता है वैसा ही वह पाता है। भगवान मृत्यु के क्षण में आखिरी विचारों के महत्व पर जोर देते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने भौतिक संसार के निर्माण के बारे में भी जानकारी दी और साथ ही भौतिक और आध्यात्मिक संसार के बीच के भेद का ज्ञान भी दिया है। यहां वह इस भौतिक अस्तित्व को छोड़ने के संबंध में उन प्रकाशवान और अंधेरे मार्गों के बारे में बताते हैं जिनके लक्ष्य के लिए वह प्रत्येक व्यक्ति को दिगदर्शित करते हैं और उसके अनुसार उन्हें प्रतिदान भी देते हैं।

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ।।

गीता 8/7

tasmāt sarveṣu kāleṣu mām anusmara yudhya ca
mayy arpitamanobuddhir mām evai 'ṣyasy asaṁśayaḥ

जीवन है तो संघर्ष साथ रहेंगे ही; संघर्षों में मन घबराये-उकताये नहीं, मनोबल मजबूत रहे- इसी के लिये है यह गीता प्रेरणा। जीवन संघर्षों में भगवान का स्मरण बना रहे। ईश्वरीय ध्यान स्मरण जीवन की ऊर्जा, शक्ति, शान्ति और बल मजबूत सम्बल है। मन बुद्धि भगवान को अर्पित अर्थात् 'साथी' एवं जीवन रथ के सारथी भगवान्! चिन्ता मिटेगी; सफलता मिलेगी।।

Therefore at all times remember Me and fight When thy mind and understanding are set on Me to Me, alone shalt thou come without doubt.

राजविद्याराजगुह्ययोग
RAJAVIDYA RAJAGUHYA YOGA
संपूर्ण ज्ञान और रहस्य का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने सार्वभौमिक विज्ञान और सार्वभौमिक रहस्यों के बारे में बताया है। वह बताते हैं कि कैसे संपूर्ण भौतिक अस्तित्व उनकी बाहरी ऊर्जा से उत्पन्न, व्याप्त, अनुरक्षित और विनाशित होते हैं और सभी प्राणी उनकी निगरानी में जन्म ले रहे और मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। तत्पश्चात् जिन विषयों को यहां सम्मिलित किया गया है वह मुख्य रूप से भक्ति सेवा से संबंधित हैं और भगवान स्वयं बताते हैं कि यह विषय सबसे गोपनीय है।

भगवान यहां यह भी बताते हैं कि ' जो कुछ भी मनुष्य करते हैं, खाते हैं, हवन करते हैं, दान करते हैं, तप करते हैं, वास्तव में सभी कुछ केवल भगवान के लिए ही करते हैं।

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।।

गीता 9/10

mayā 'dhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram
hetunā 'nena kaunteya jagad viparivartate

प्रकृति ईश्वर द्वारा संचालित है। प्रकृति के साथ ईश्वरीय आस्था जुड़ने से प्रकृति सम्मान पायेगी, प्रदूषण कम होगा । प्रकृति या समूची सृष्टि परिवर्तन के चक्र में है लेकिन ईश्वरीय सत्ता अधिष्ठान है। वैज्ञानिक प्रमाणिकता का ग्रन्थ है भगवद्गीता। बिना किसी स्थिर सत्ता के परिवर्तन का चक्र चल ही नहीं सकता–यह सर्वमान्य तथ्य है।

Under My guidance, nature (Prakriti) gives birth to all things, moving and unmoving and by this means, O Son of Kunti (Arjuna), the world revolves.

विभूतियोग
VIBHUTI YOGA
दिव्य विभूतियों का योग

यह अध्याय सभी स्थितियों में भगवान श्रीकृष्ण के श्रेष्ठत्तम स्वरुप को व्यक्त करता है। यहां वह अपनी विशेष विभूतियों को निर्दिष्ट करते हैं। भगवान यहां कहते हैं कि 'वह सभी रचनाओं, विज्ञानों, आत्म विज्ञानों का प्रारम्भ, मध्य और अंत हैं। वह यहां यह भी कहते हैं कि वही हर प्रकार के वाद-विवाद और चर्चाओं में निहित तर्क भी हैं।

इसके अतिरिक्त वह कहते हैं कि विवेक, ज्ञान, घबराहट से मुक्ति, धैर्य, सत्य, आत्म-नियंत्रण, शांति, सुख और दुख, अस्तित्व और अस्तित्वहीन, भय और निडरता जैसी विभिन्न स्थितियां उन्हीं से प्रारम्भ होती हैं।

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः।।

गीता 10/6

maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavas tathā
madbhāvā mānasā jātā yeṣāṁ loka imāḥ prajāḥ

कितना प्रेरक भावार्थ है इस गीता श्लोक में। बिना भेद भाव के समूची सृष्टि, प्रजा ईश्वरीय भाव संकल्प से अर्थात् सब एक ही ईश्वर के हैं, उससे हैं! सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषि,मनु-फिर आगे प्रजा ! इस का अभिप्राय ऋषियों की त्याग, तप, परहित की परम्परा जीवन का आधार बनें और मानव हैं, मानव बन कर रहें, मानवता का सम्मान करें!

The seven great sages of old, and the four Manus also are of my nature and born of my mind and from them are all these creatures in the world.

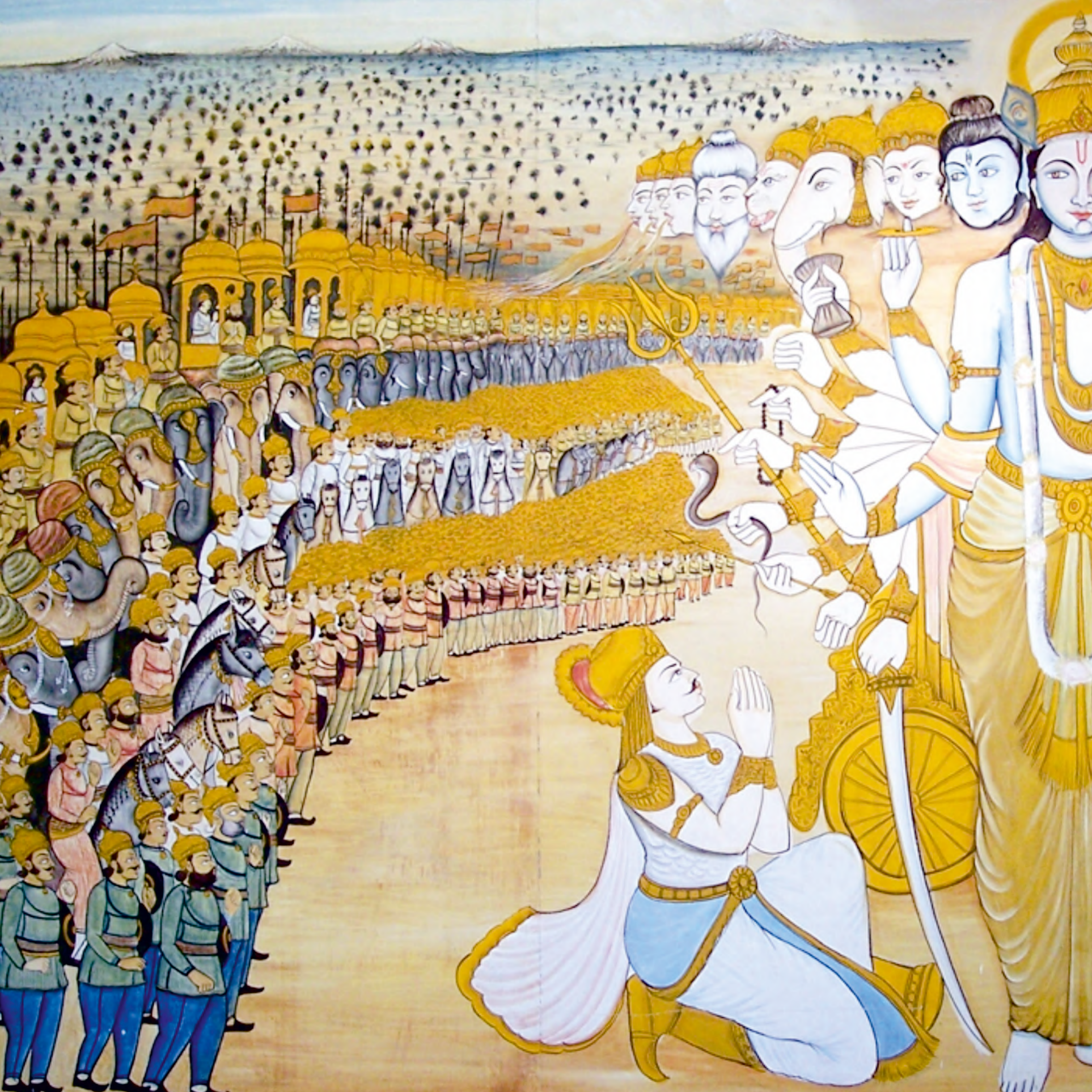

विश्वरूपदर्शनयोग
VISHWARUPA DARSHANA YOGA
विश्वरूप का दृष्टिकोण

इस अध्याय में अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण को सभी अस्तित्व दिखाते हुए अपने सार्वभौमिक रूप को प्रकट करने का अनुरोध किया है। भगवान के विराट स्वरूप को देखने के बाद अर्जुन ने कहा, 'आपका कोई आरंभ, मध्य या अंत नहीं है, आपके पास महान शक्ति, अनंत अस्त्र-शस्त्र हैं। चन्द्रमा और सूर्य आपके नेत्र हैं, आपका मुख उस अग्नि के समान है जिसका प्रकाश इस पृथ्वी को जलाता है।'

दिवि सूर्यसहस्त्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ।।

गीता 11/12

divi sūryasahasrasya bhaved yugapad utthitā
yadi bhāḥ sadṛśī sā syād bhāsas tasya mahātmanaḥ

ईश्वरीय सत्ता विराट प्रकाशमय है। इस गीता श्लोक अनुसार हजार सूर्यों का प्रकाश एक साथ भी ईश्वरीय प्रकाश की तुलना नहीं कर सकता। ईश्वरीय अंश होने से जीव मात्र का स्वरूप भी प्रकाश है। इसीलिये अन्धकार से प्रकाश हमारी स्वाभाविक परम्परा है। अज्ञानता के अन्धकार में ही जीव बुराइयों में प्रवृत्त होता है, विवेक ज्ञान का प्रकाश संन्मार्ग दिखाता है, बुराइयों में गिरने से बचाता है! आओ बढ़ें अन्धकार से प्रकाश की ओर !

If the light of a thousand suns were to blaze forth all at once in the sky, that might resemble the splendour of that exalted being.

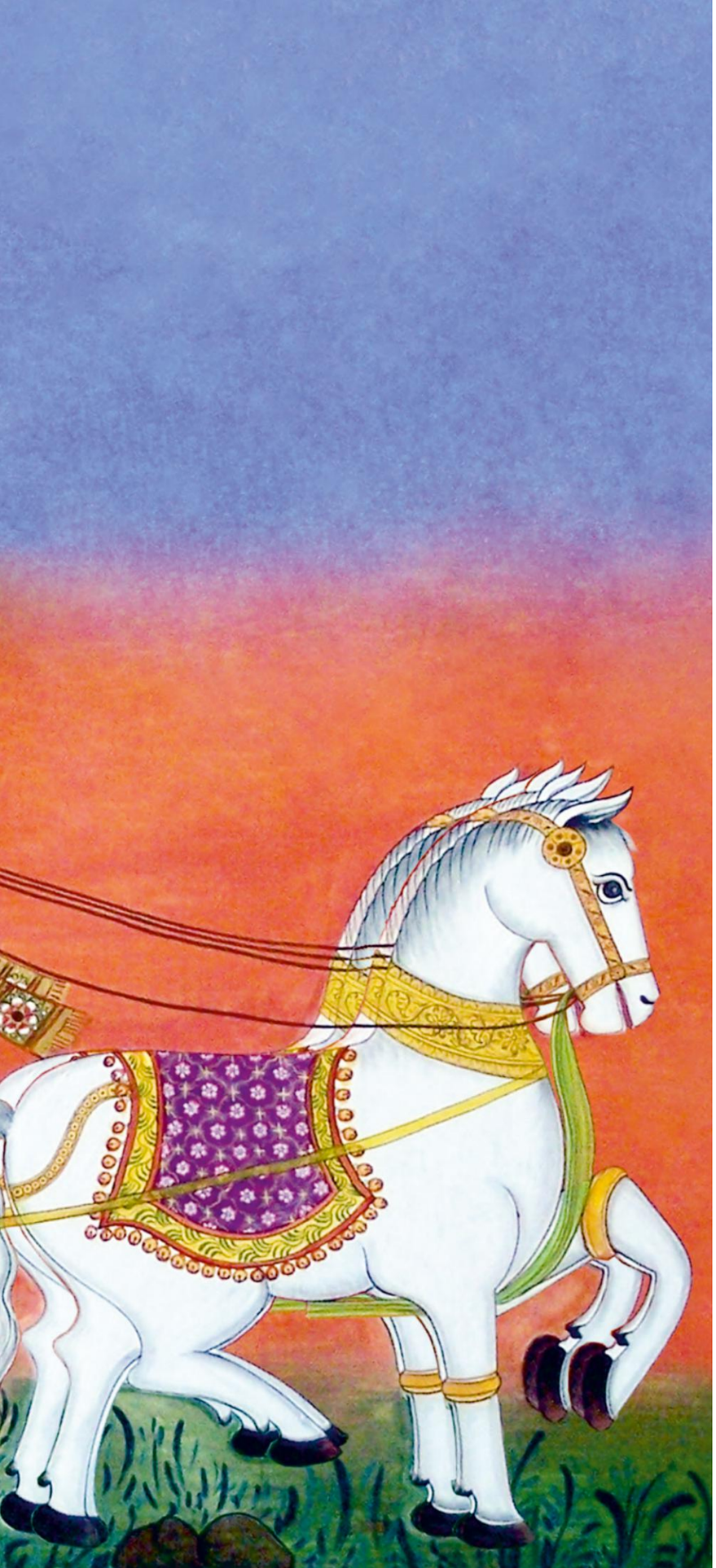

भक्तियोग
BHAKTI YOGA
भक्ति योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ईश्वर की भक्ति की महिमा का वर्णन करते हैं। इसके साथ-साथ वह आध्यात्मिक विषयों के विभिन्न रूपों को भी बताते हैं और भक्तों के गुणों की चर्चा करते हैं, जो इस तरह से अपने कर्मों के माध्यम से उनके लिए बहुत प्रिय हो जाते हैं।

यहां भगवान घोषणा करते हैं कि जो कोई किसी से कुछ भी आशा नहीं करता है वह शुद्ध है, कार्यकुशल है, बिना किसी चिंता के है और ऐसा व्यक्ति जो परिस्थितियों से परेशान नहीं होता है, और वह कुछ भी शुरू नहीं करता है, वह मेरा भक्त है।

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः।।

गीता 12/4

sanniyamyendriyagrāmaṁ sarvatra samabuddhayaḥ
te prāpnuvanti mām eva sarvabhūtahite ratāḥ

व्यक्तित्व विकास में अद्‌भुत व्यापक निखार का मूल मंत्र है यह गीता श्लोक। खाने-पीने, बोलने, देखने आदि में संयम की स्थिति। प्राणी,पदार्थ, परिस्थितियों में समता एवं विशेष रूप से समस्त प्राणियों के प्रति हित चिन्तन। 'सर्वभूतहिते रताः' जैसे आदर्श गीता वाक्य सिद्ध करते हैं कि यह ग्रन्थ हिन्दुओं की आस्था तो है, लेकिन केवल हिन्दुओं के लिये नहीं, समग्र प्राणी जगत के कल्याण की अनूठी वैश्विक प्रेरणा है।

By restraining all the senses, being even-minded in all conditions, rejoicing, in the welfare of all creatures, they come to me indeed (just like the others).

क्षेत्र–क्षेत्रज्ञविभागयोग
KSHETRA KSHETRAJNA VIBHAGA YOGA
क्षेत्र और उसके स्वामी के ज्ञान का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण भौतिक शरीर और अमर आत्मा के बीच अंतर को दर्शाते हैं। वह बताते हैं कि भौतिक शरीर क्षणभंगुर और नाशवान है, जबकि आत्मा अपरिवर्तनीय और अनन्त है। भगवान व्यक्तिगत आत्मा और सर्वोच्च आत्मा के बारे में सटीक ज्ञान देते हैं।

इस अध्याय में भगवान यह भी बताते है कि वह (ईश्वर) सभी प्राणियों के बाहर और अंदर विद्यमान है। वह जड़ भी है और गतिमान भी, वह इतना सूक्ष्म है कि उसे जानना कठिन है। वह बहुत दूर है, और बहुत पास भी है।

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्।।

गीता 13/15

bahir antaś ca bhūtānām acaraṁ caram eva ca
sūkṣmatvāt tad avijñeyaṁ dūrasthaṁ cāntike ca tat

परमात्मा हर कण में है, हर क्षण में है। भीतर है, बाहर है! दूर से दूर एवं निकट से निकट वही है। हम जो हैं, जहाँ हैं, जैसे हैं- परमात्मा की निकटता का, उनके अपनत्व का अनुभव कर सकते हैं। कहीं, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं एक विशेष अति उपयोगी प्रेरणा –'बाहर' 'सर्वव्यापी' रूप से परमात्मा हमारे कर्मो का साक्षी है, 'भीतर' 'अन्तर्यामी' रूप से हमारे विचारों भावों का ! शुद्ध भाव एवं सत्कर्मो की अनूठी प्रेरणा!

He is without and within all beings. He is unmoving and also moving. He is too subtle to be known. He is far away and yet he is near.

गुणत्रयविभागयोग
GUNATRAYA VIBHAGA YOGA
तीन गुणों के अन्तर का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने अच्छाई, वासना और अज्ञान से संबंधित विषयों को प्रकट किया है, जो कि भौतिक अस्तित्व में हर वस्तु को प्रभावित करते हैं। यहां उन्होंने व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक गुण का विवरण दिया। उन्होंने गुणों के कारण, उनकी शक्ति का स्तर, कैसे वे दूसरों को प्रभावित करते हैं और साथ ही उनसे ऊपर उठने वाले व्यक्ति के लक्षणों के बारे में भी बताया। यहां, वह स्पष्ट रूप से अज्ञानता और वासना का त्याग करने और शुद्ध भलाई का मार्ग अपनाने का परामर्श देते हैं, जब तक कि व्यक्ति इन्हें पार करने की क्षमता न प्राप्त कर ले।

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।।

गीता 14/16

karmaṇaḥ sukṛtasyā 'huḥ sāttvikaṁ nirmalaṁ phalam
rajasas tu phalaṁ duḥkham ajñānaṁ tamasaḥ phalam

सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, जीवन यात्रा में स्वाभाविक हैं। सत्त्वगुण सत्कर्मों में प्रेरित करता है, सत्कर्मों का परिणाम अन्तःकरण की निर्मलता और सुख होता ही है। रजोगुण लोभ, अहंकार, कामनाओं आदि की अधिकता से कर्मों में प्रवृत करता है। जहां ये वृत्तियां हावी होंगी, परिणाम मानसिक विक्षेपता एवं दुःख की स्थिति। तमोगुण प्रमाद,आलस्य अतिनिद्रा आदि में ही लगाये रखकर जीवन में जड़ता की सी स्थिति बनाता है। बढ़े प्रमाद से पुरूषार्थ तथा स्वार्थ से परमार्थ की ओर!

The fruit of good action is said to be of the nature of "goodness" and pure; while the fruit of passion is pain, the fruit of dullness is ignorance.

चंद्रमा
अरजण

पुरूषोत्तमयोग
PURUSHOTTAMA YOGA
सर्वोच्च आत्मा का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ईश्वर के गुणों की व्याख्या करते हुए बताते हैं कि उसकी महिमा और विशेषताएं अतुलनीय, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त, वह ईश्वर के बारे में जानने का उद्देश्य और उसका महत्व बताते हैं और यह भी कि उसे कैसे जाना जा सकता है।

इस अध्याय के अनुसार, जब भगवान एक शरीर को प्राप्त करते हैं या छोड़ देते हैं, तो वे अपने साथ पांचों इंद्रियों और मन को साथ ले जाते हैं, जैसे कि हवा किसी स्थान की सुगंध को अपने साथ ले जाती है।

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।।

गीता 15/8

śarīraṁ yad avāpnoti yac cā 'py utkrāmatī 'śvaraḥ
gṛhītvai 'tāni saṁyāti vāyur gandhān ivā 'śayāt

शरीर की मृत्यु और उसके साथ यह भी निश्चित है कि यहाँ का सब यहीं छूटना है। लाये नहीं थे, ले जायेंगे नहीं ! यहीं मिला है, यहीं के लिये मिला है। साथ जाती है शुभ-अशुभ कर्मों की सुगन्ध या दुर्गन्ध; गीता के इस श्लोक के अनुसार वैसे ही जैसे वायु फूलों के स्पर्श से सुगन्ध तथा गंदगी के ढेर से छूकर दुर्गन्ध लेकर आगे बढ़ती है।

When the lord takes up a body and when he leaves it, he takes these (the senses & mind) and goes even as the wind carries perfumes from their places.

देवासुरसम्पद्विभागयोग
DAIVASURA SAMPAD VIBHAGA YOGA
दैवीय और दानवी सम्पदाओं का योग

इस अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण दिव्यता के अनुकूल और सही प्रकृति के दिव्य गुणों, आचरण और क्रियाओं को स्पष्ट रूप से वर्णित करते हैं। वह यहां देवी एवं आसुरी सम्पदाओं से युक्त मनुष्यों के लक्षणों को भी प्रकट करते हैं। इसके अतिरिक्त वह प्रलोभन में फंसे अनाचारी, अधम एवं अशुभ प्रकृति के लोगों का भी वर्णन करते हैं जोकि दैवीय गुणों वाले मनुष्यों के ठीक विपरीत होते हैं।

दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ।।

गीता 16/5

daivī sampad vimokṣāya nibandhāyā surī matā
mā śucaḥ sampadaṁ daivīm abhijāto 'si pāṇḍava

सीढ़ी छत की ऊँचाई पर भी ले जाती है, लेकिन संभल कर नहीं चले तो नीचे भी गिरा देती है। मनुष्य जीवन की भी यही स्थिति है। दैवीया सदगुणों के आश्रय से मानव देवत्व की ऊँचाई तथा उस माध्यम से चिन्ता,भय, शोक एवं सब प्रकार के कर्म बंधन से मोक्ष पा सकता है, लेकिन अज्ञानतावश दुष्वृत्तियों, विकारों में फिसलकर पतन में भी गिर सकता है। गीता का यह भाव प्रेरित कर रहा है– ऐ मानव! चिन्ता मतकर, स्वभाव से तू देवत्व के लिये ही उत्पन्न हुआ है, अपने भीतर के देवत्व को पहचान।

The divine endowments are said to make for deliverance and the demoniac for bondage. Grieve not, O Pandava (Arjuna), thou art born with the divine endowments (for a divine destiny).

श्रद्धात्रयविभागयोग
SHRADDHATRAYA VIBHAGA YOGA
आस्था के तीन रूप

यह अध्याय तीन प्रकार की आस्थाओं से सम्बन्धित है, जोकि तीन गुणों सत, रज एवं तम पर आधारित है। भगवान इस अध्याय में तीन प्रकार के विश्वास, भोजन, यज्ञ, दान और तप की विषद व्याख्या करते हैं। यह तीन प्रकार के विश्वास ही इस संसार में मानवीय चेतना को निर्धारित करते हैं।

यहां भगवान कहते हैं कि अच्छा दान वह है जो किसी भी तरह से वापसी की आशा किए बिना दिया जाता है, और जो किसी योग्य व्यक्ति को उचित समय व उचित स्थान पर दिया जाता है।

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।।

गीता 17/26

sadbhāve sādhubhāve ca sad ity etat prayujyate
praśaste karmaṇi tathā sacchabdaḥ pārtha yujyate

परमात्मा रूपी सत्य को स्वीकार करो। 'सत्' की सुन्दर मंगलमय परम्परा जीवन की अनूठी प्रेरणा बन जायेगी। सत् के आधार से बुद्धि-सद्बुद्धि, विचार-सद्विचार,भाव -सद्भाव और आगे सद्गुण, सत्कर्म, सदाचार आदि की स्थिति स्वतः जीवन में आयेगी; जिसकी आज प्रबल आवश्यकता है। सत् अर्थात् परमात्मा को न स्वीकारने से ही जीवन दुर्बुद्धि, दुर्व्यसन, दुष्कर्म,दुर्भाव,दुराचार रूपी पतन में गिरता है।

The word "sat" is employed in the sense of reality and goodness; and so also, O Partha (Arjuna), the word "sat" is used for praiseworthy action.

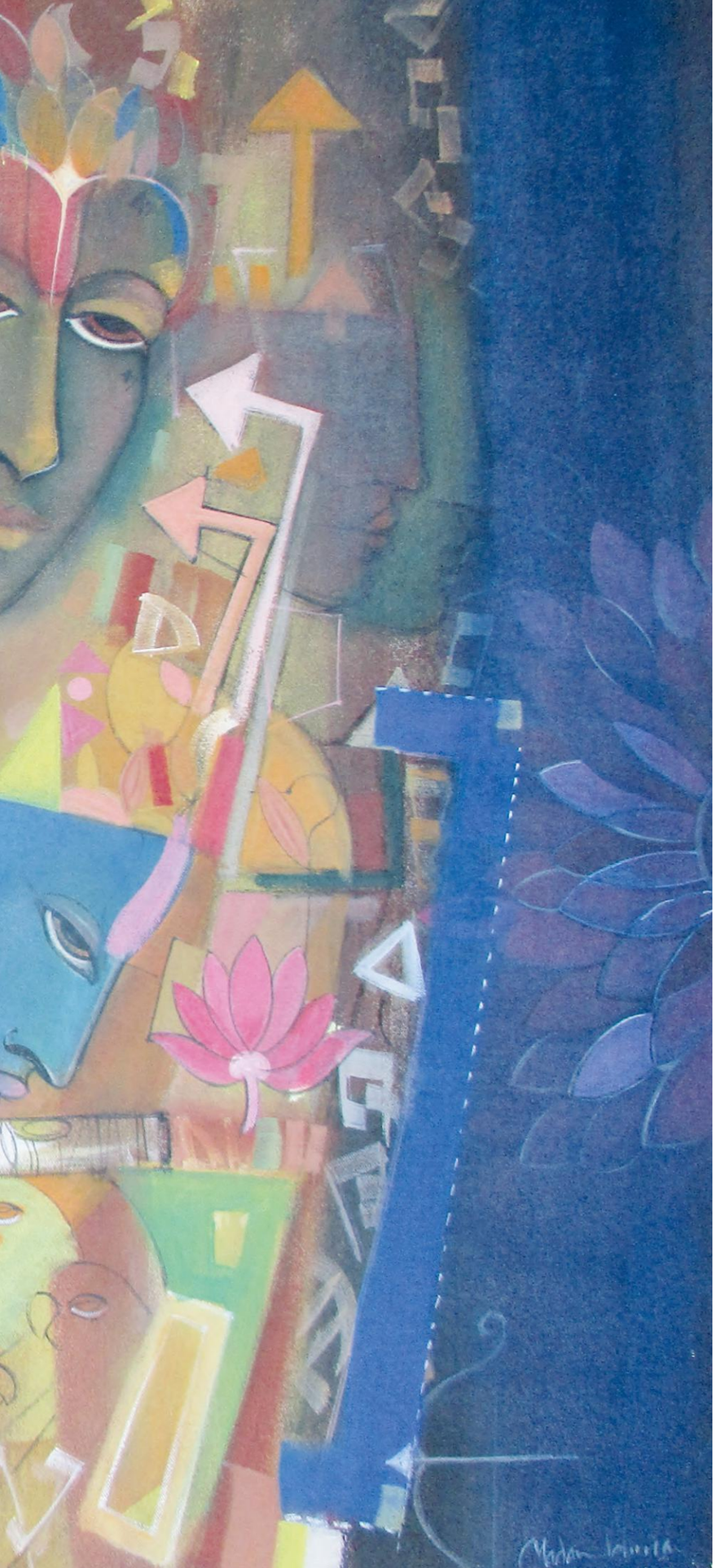

मोक्षसंन्यासयोग
MOKSHA SANYASA YOGA
सन्यास से मोक्ष का योग

गीता के इस अंतिम अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण पिछले अध्यायों में बतायी गयी बातों का सारांश प्रस्तुत करते हैं और कर्म, भक्ति एवं ज्ञान के मार्ग से मुक्ति प्राप्ति करने का विवरण देते हैं। भगवान बताते हैं कि ऐसा करते समय बिना किसी संकोच के ईश्वर को सब कुछ समर्पित कर देना चाहिए। भगवान यहां घोषणा करते हैं कि मनुष्य अपना कर्तव्य करते हुए उस परमात्मा की पूजा करके ही पूर्णता प्राप्त करता है, जिसके द्वारा सभी प्राणी उत्पन्न होते हैं।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

गीता 18/78

yatra yogeśvaraḥ kṛṣṇo yatra pārtho dhanurdharaḥ
tatra śrīr vijayo bhūtir dhruvā nītir matir mama

भगवद्गीता के प्रथम श्लोक में धृतराष्ट्र ने संजय से युद्ध परिणाम को लेकर प्रश्न किया था। सम्पूर्ण गीता उपदेश हो जाने पर अंतिम श्लोक में संजय स्पष्ट कहते है- राजन्! विजय तो सत्य की ही होगी। सत्ता के समक्ष सत्य कहने की अद्भुत स्थिति। जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं अर्थात् जहाँ केवल भोगवाद -भौतिकवाद नहीं 'अध्यात्म' 'योग' का आधार है तथा जहाँ अर्जुन अर्थात् कर्त्तव्य के प्रति समर्पित निष्ठा है, वहीं श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है। सार रूप में सीधी बात- 'कर्म' के साथ 'धर्म' भौतिकवाद के साथ अध्यात्म; पुरूषार्थ के साथ 'परमार्थ' का समन्वय ही सफलता का मूल मंत्र है।

Wherever there is Krishna, the lord of yoga, and Partha (Arjuna), the archer, I think, there will surely be fortune, victory, welfare and morality.

गीता ज्ञान संस्थानम्

श्रीमद्भगवद्गीता - समूचे विश्व में

भारत का सम्मान - स्वाभिमान - हरियाणा का गौरव;

हरियाणा के इस वैश्विक गौरव की व्यावहारिक अभिव्यक्ति -

गीता की उपदेश स्थली धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में निर्माणाधीन

गीता ज्ञान संस्थानम्

जहां गीता के प्रत्येक श्लोक पर मन्थन-शोध;

शिक्षा-चिकित्सा, प्रकृति-राजनीति, व्यवसाय-न्याय,
प्रशासन-अनुशासन आदि हर विषय पर

गीता की प्रांसगिकता उपयोगिता,

- गीता अध्ययन केन्द्र
- विश्व स्तरीय गीता-पुस्तकालय
- गीता गौरव को अभिव्यक्त करता गीता संग्रहालय आदि अनेकों गरिमामय प्रकल्पों के साथ सीधी सीधी प्रेरणा:

जीओ गीता के संग, सीखो जीने का ढंग!

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्तवकर्मणि।।

भगवद्गीता 2/47

मानव को केवल कर्म करने का अधिकार है,
उसके फल पर उसका कोई अधिकार नहीं।
मानव के कर्म का उद्देश्य फल प्राप्ति कभी नहीं होना चाहिए
और न ही कर्म के त्याग के प्रति मानव अनुराग होना चाहिए।

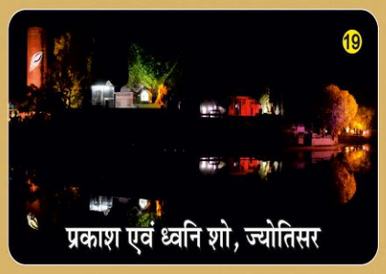

ब्रह्म सरोवर

श्रीकृष्ण संग्रहालय

कुरुक्षेत्र पैनोरमा विज्ञान केन्द्र

सन्निहित सरोवर

कुरुक्षेत्र का मार्गदर्शक मानचित्र

कुरुक्षेत्र के अन्य पर्यटक स्थल

1. श्रीकृष्ण संग्रहालय
2. कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र
3. सन्निहित सरोवर
4. ब्रह्म सरोवर
5. कृष्ण-अर्जुन रथ
6. सदाचार स्थल
7. गुरुद्वारा छवीं पातशाही
8. भद्रकाली शक्तिपीठ
9. स्थाण्वीश्वर महादेव मन्दिर
10. ओ.पी. जिन्दल पार्क
11. शेख चहेली का मकबरा
12. पुरातात्विक स्थल, हर्ष को टीला
13. बाण गंगा, दयालपुर
14. धरोहर हरियाणा संग्रहाल
15. बौद्ध स्तूप
16. भीष्म कुण्ड, नरकातारी
17. कल्पना चावला तारामण्डल
18. गीता जन्मस्थली- ज्योतिसर
19. ध्वनि एवं प्रकाश शो, ज्योतिसर
20. मेजर नितिन बाली शहीद स्मारक

प्रकाश एवं ध्वनि शो, ज्योतिसर

गीता जन्मस्थली, ज्योतिसर

कल्पना चावला तारामण्डल

भीष्म कुण्ड, नरकातारी

बौद्ध स्तूप

धरोहर हरियाणा संग्रहालय

बाण गंगा, दयालपुर

पुरास्थल, हर्ष का टीला

शेख चहेली का

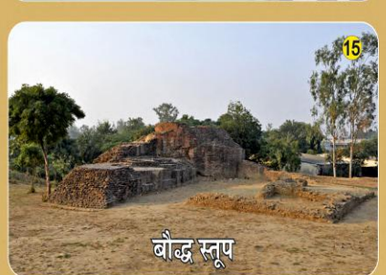

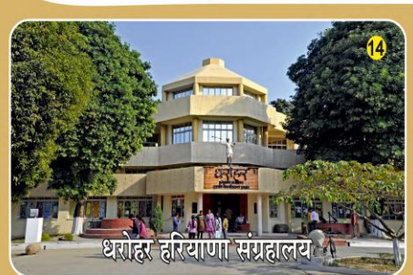

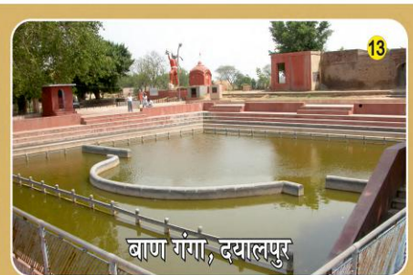

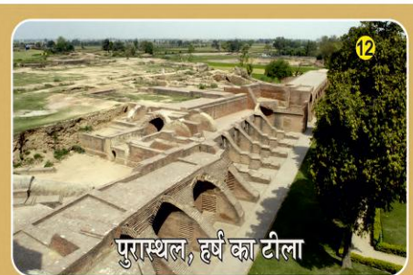

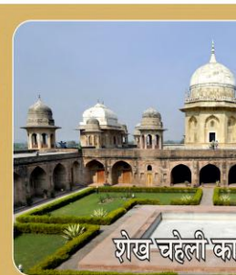

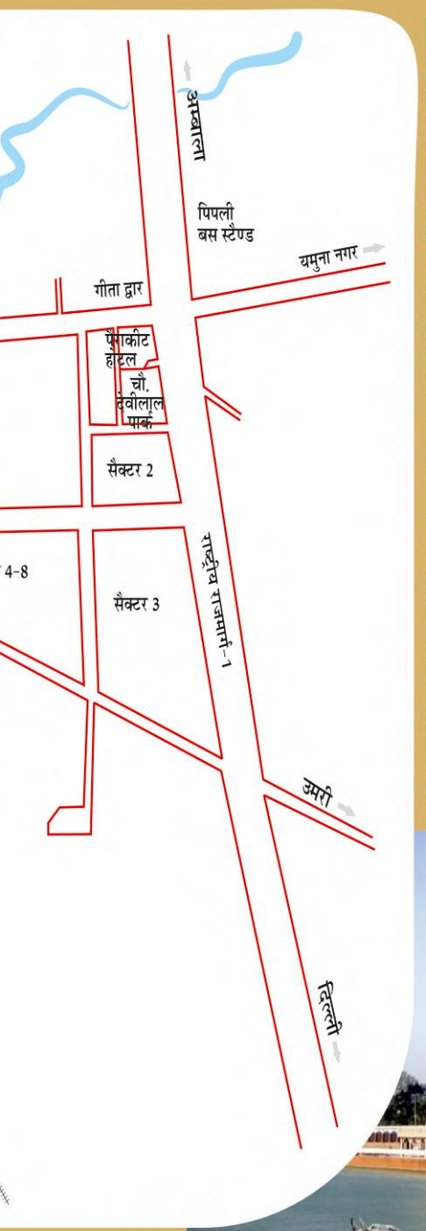

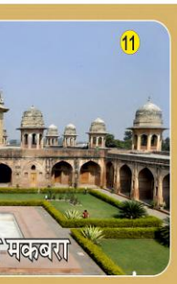

पर्यटन के अन्य आकर्षण और यात्रा एवं आवास की जानकारी

राजा हर्ष का टीला, थानेसर
सरस्वती घाट, झांसा रोड, थानेसर
बौद्ध स्तूप, समीप ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र
राजा कर्ण का टीला, मिर्जापुर, कुरुक्षेत्र
पुरास्थल और सरस्वती का तट, भोर सैयंदा
बीबीपुर कलां, पेहवा में सरस्वती तट पर पुरास्थल
पुरास्थल, जोगनाखेड़ा, कुरुक्षेत्र
पुरास्थल, अमीन, कुरुक्षेत्र
पुरास्थल, दौलतपुर, कुरुक्षेत्र

यात्रा की जानकारी

कुरुक्षेत्र दिल्ली से 160 किमी तथा चंडीगढ़ से 112 किलोमीटर

वायु मार्ग

निकटतम हवाई अड्डे: दिल्ली और चंडीगढ़।
यहां से कुरुक्षेत्र के लिए उत्तम सड़कें मौजूद हैं।

रेल मार्ग

निकटतम रेलवे स्टेशन: कुरुक्षेत्र जंक्शन। यह देश के सभी महत्वपूर्ण शहरों और कस्बों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

सड़क मार्ग

हरियाणा राज्य परिवहन और अन्य राज्य परिवहन निगमों की बसें कुरुक्षेत्र से होते हुए दिल्ली, चंडीगढ़ और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों को जोड़ती हैं। अच्छी टैक्सी सेवाएं भी मौजूद हैं।

आवासीय व्यवस्थाएं

हरियाणा पर्यटन की ओर से कुरुक्षेत्र जिले में संचालित पर्यटन परिसर

नीलकंठी यात्री निवास-कुरुक्षेत्र, पैराकीट टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स-पिपली, अंजन टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स-पेहवा

अन्य सुविधाएं

कई मंदिर, धर्मशालाएं, गुरुद्वारे और निजी होटल भी आवास की सुविधा प्रदान करते हैं।

प्रेरणा

गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज

अवधारणा

श्री मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

विषय वस्तु समीक्षा

श्री राजेश खुल्लर, प्रधान सचिव, मुख्यमंत्री, हरियाणा

संपादन

डॉ. अमित अग्रवाल, सचिव, राज्यपाल, हरियाणा एवं
सदस्य सचिव, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

सुश्री सुमेधा कटारिया, उपायुक्त, कुरुक्षेत्र

विषय वस्तु परामर्श

श्री उपेन्द्र सिंघल, सदस्य, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

श्री मदन मोहन छाबड़ा, सदस्य, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

श्री राजेन्द्र सिंह राणा, क्यूरेटर, श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र

श्री बलवान सिंह, आर्टिस्ट, श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र

भाषा विवक्षा

श्री मायाचन्द

श्री अभय सिंह यादव

डिजाइन एवं लेआउट

श्री सुनील गर्वाण

www.kdb.co.in
@gitamahotsav
gitamahotsav
@gitamahotsav
gitamahotsav@gmail.com